UNIVERSAL LIBRARY
OU_182399
UNIVERSAL LIBRARY

OUP—391 29-4-72—10,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 81.092 Accession No. H 2587

Autho P185

Title

This book should be returned on or before the date last marked below

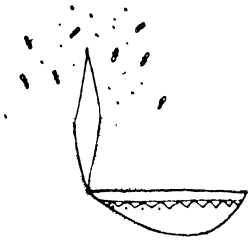

आत्माराम एन्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

साहिर लुधियानवी

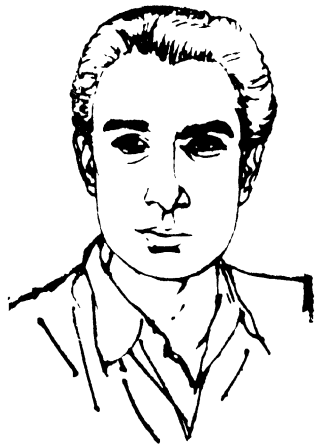

और उनकी शायरी

राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली

संपादक
प्रकाश पंडित

प्रथम संस्करण
जनवरी, १९५८

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रैस
डफरिन पुल, दिल्ली

सूची

जीवनी	...	५—२२
चयन	...	२३—९६
१. मताअ़-ग़ैर	...	२५
२. रद्दे-अमल	...	२७
३. एक मंज़र	...	२७
४. एक वाक़या	...	२८
५. शहकार	...	२९
६. ख़ाना-आबादी	...	३०
७. शिकस्त	...	३१
८. किसी को उदास देखकर	...	३३
९. सोचता हूँ	...	३६
१०. मुझे सोचने दे !	...	३८
११. चकले	...	४०
१२. ताजमहल	...	४२
१३. फ़नकार	...	४४
१४. कभी-कभी	...	४५
१५. फ़रार	...	४७
१६. कल और आज	...	४९

१७. हिराम ... ५१
१८. इसी दोराहे पर ... ५३
१९. एक तस्वीरे रंग ... ५५
२०. खुदकुशी से पहले ... ५७
२१. मेरे गीत तुम्हारे हैं ... ५९
२२. नूरजहाँ के मज़ार पर ... ६१
२३. जागीर ... ६३
२४. मादाम ... ६५
२५. तेरी आवाज़ ... ६७
२६. परछाइयां ... ७०
२७. मेरे गीत ... ८१
२८. आज ... ८३
२९. तुलूअ-ए-इश्तराकियत ... ८७
३०. आवाज़े-आदम ... ८९
३१. कुछ ग़ज़लें ... ९०
३२. कुछ शेर ... ९५

दुनिया ने तजुरबात-हवादिस की शक्ल में।
जो कुछ मुझे दिया है वो लौटा रहा हूं मैं॥

जीवनी

साहिर को मैंने बहुत क़रीब से देखा है।

१९४३ ई० में—जब वह 'साहिर' कम और अब्दुलहयी अधिक था और अपने आपको 'साहिर' यानी शायर मनवाने और अपना कविता-संग्रह 'तल्खियां' छपवाने के लिए दिन-रात लाहौर की सड़कें नापा करता था।

१९४५ ई० में—जब 'तल्खियां' के प्रकाशन के साथ ही उसने ख्याति की कई सीढ़ियां एकदम तै कर लीं। प्रसिद्ध उर्दू पत्र 'अदबे-लतीफ़' और 'शाहकार' (लाहौर) का सम्पादक बना और देवेन्द्र सत्यार्थी ने उससे मेरा बाक़ायदा परिचय कराया।

१९४८ ई० में—जब वह ख्याति के अन्तिम शिखर पर पहुँच चुका था, बम्बई के फ़िल्म जगत से निकलकर शरणार्थी की हैसियत से लाहौर में आबाद था और भारतीय लेखकों के एक गैर-सरकारी मैत्रीमंडल के सदस्य-स्वरूप मैं उसके यहां दो दिन रहा था।

लेकिन इस सबके बावजूद 'साहिर' के व्यक्तित्व और उसके आधार पर उसकी शायरी के इस अवलोकन का मुझे अधिकार न पहुँचता यदि १९४९ ई० में मेरी उससे भेंट न होती।

दिल्ली में 'साहिर' से मेरी भेंट आकस्मिक तो थी पर आश्चर्यजनक नहीं। लाहौर में उसके यहां दो दिन रहकर ही मैंने अनुमान लगा लिया था कि 'साहिर' वहां खुश नहीं रह सकता था। 'साहिर' वहां इसलिए खुश नहीं रह सकता था चूँकि उसे अपने चारों ओर एक ही मत तथा धर्म के लोगों की भरमार नज़र आती थी। क़लम की आज़ादी थी न ज़बान की, और उन मित्रों की जुदाई तो उसके लिये अत्यन्त असह्य हो रही थी जो अपने नामों से हिन्दू और सिख थे और जिनके साथ 'साहिर' ने अपना पूरा जीवन व्यतीत किया था; और मैंने देखा था कि 'साहिर' के साथ-साथ उसकी माता को भी हम हिन्दुओं को अपने यहां देखकर मानो कोई खोया हुआ खज़ाना मिल गया था। अतएव दिल्ली में 'साहिर' से जब मेरी भेंट हुई तो मुझे कोई आश्चर्य न हुआ और जब उसने अपने विशेष 'नटखट' स्वर में मुझे बताया कि पाकिस्तान सरकार ने उसके खिलाफ़ वारंट गिरफ़्तारी जारी कर दिये हैं तो मैंने कारण तक पूछने की आवश्यकता न समझी। बाद में उसकी माता को दिल्ली लिवा लाने के लिए जब मैं लाहौर पहुँचा तो मालूम हुआ कि द्वैमासिक पत्रिका 'सवेरा' में जिस का उन दिनों वह सम्पादक था, उसकी क़लम ने राज्य के विरुद्ध विष की कुछेक बूँदें टपका दी थीं।

दिल्ली 'साहिर' की मंज़िल नहीं पड़ाव था। वह शीघ्र से शीघ्र बम्बई पहुँचना चाहता था, जहां उसके विचार में फ़िल्म जगत बड़ी अधीरता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। लेकिन

शायद इस ख़याल से कि पथिक पर कुछ अधिकार पड़ाव का भी होता है, या न जाने किस ख़याल से, उसने पूरा एक वर्ष दिल्ली की भेंट कर दिया। और मैं यद्यपि 'साहिर' से बाद में भी मिलता रहा हूँ (१९५३ ई० में प्रगतिशील-लेखक-संघ के अखिल-भारतीय सम्मेलन और १९५६ ई० में एशियन राइटर्स कांफ्रेंस दिल्ली के अवसर पर जब वह मेरा मेहमान रहा) लेकिन उसे और उसकी शायरी को यथोचित रूप से समझने और जांचने-परखने का मौका मुझे उसी एक वर्ष में मिला जब उर्दू पत्रिका 'शाहराह' और 'प्रीतलड़ी' के सम्पादन के सिलसिले में हम दोनों ने न केवल एक साथ काम किया बल्कि एक साथ एक ही घर में रहे।

'साहिर' अभी-अभी सोकर उठा है (प्रायः दस-ग्यारह से पहले वह कभी सोकर नहीं उठता) और नियमानुसार अपने ६ फुटे क़द की जलेबी बनाये, लम्बे-लम्बे पीछे को पलटने वाले बाल बिखराये, बड़ी-बड़ी लाल आंखों से किसी भी बिन्दु पर मैसमरेज़म की-सी टकटकी बाँधे बैठा है। (इस समय अपनी इस समाधि में वह किसी प्रकार का विघ्न सहन नहीं कर सकता। यहाँ तक कि उसकी प्यारी अम्मी भी, जिसका वह बहुत आदर करता है और अपने जागीरदार पति से विच्छेद हो जाने के बाद से जिसके जीवन का वह एकमात्र सहारा है, वह भी उसके कमरे में प्रवेश करने का साहस नहीं कर सकती) कि एकाएक 'साहिर' पर दौरा-सा पड़ता है और वह चिल्लाता है—"चाय !"

और सुबह की इस आवाज़ के बाद दिन भर, और मौका मिले तो रात भर, वह निरन्तर बोले चला जाता है। आध घंटे से अधिक किसी जगह टिक कर नहीं बैठता और मित्रों-परिचितों का जमघटा तो उसके लिए दैवी निधि से कम नहीं। उन्हें वह सिग्रेट पर सिग्रेट पेश करता है (गला अधिक ख़राब न हो इसलिए स्वयं सिग्रेट के दो टुकड़े करके पीता है, लेकिन अक्सर दोनों टुकड़े एक-साथ पी जाता है)। चाय के प्यालों के प्याले उनके गले में उँडेलता है (स्वयं भी दो-चार चख लेता है) और इस बीच में अपनी नज़्मों-गज़लों के अलावा दर्जनों दूसरे शायरों के सैंकड़ों शेर जो उसे अपनी नज़्मों-ग़ज़लों ही की तरह ज़बानी याद हैं, बड़ी दिलचस्प घटनाओं के साथ जोड़-जोड़ कर सुनाता चला जाता है। अपनी नज़्में-ग़ज़लें और दूसरे शायरों का कलाम ही नहीं, उसे अपने जीवन की हर छोटी-बड़ी घटना याद है, अपने मित्रों और पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों के पूरे के पूरे पत्र याद हैं। आज तक उसकी शायरी के पक्ष या विपक्ष में लिखी गई हर पंक्ति याद है। यहाँ तक कि बाल्यावस्था में देखी हुई मेडन थियेटर की 'इन्द्र-सभा' और 'शाहबहराम' नामक फ़िल्मों के पूरे के पूरे डायलॉग याद हैं।

और मज़े की बात यह है कि बात चाहे वह सहगल की सुरीली आवाज़ से शुरू करे या मद्रासी दोसे के अजीबो-ग़रीब स्वाद से, तान सदा उसके अपने व्यक्तित्व पर टूटती है। लेकिन इस सुन्दर ढंग से कि सुनने वाले को अनुभव तक नहीं

होता कि दिलचस्प लतीफ़ों और विचित्र घटनाओं के पर्दे में जो चीज़ उसके मस्तिष्क में बिठाई जा रही है, वह यह है कि इस काल ने यदि उर्दू का कोई महान शायर पैदा किया है तो वह 'साहिर' है— 'साहिर' लुधियानवी—जिसके कविता-संग्रह 'तल्ख़ियाँ' के दर्जन भर संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

और रात के दस, ग्यारह, बारह या एक बजे उसके मित्र-परिचित दूसरे दिन मिलने का वायदा करके एक के बाद एक उसका साथ छोड़ जाते हैं और यद्यपि कम से कम एक 'धर्म-योद्धा'[1] उस समय भी उसके साथ होता है, उसे बड़े कटु प्रकार का एकांत महसूस होने लगता है और न जाने कहाँ से उसमें 'बोहिमियनिज़्म' के ऐसे भयंकर कीटाणु घुस आते हैं कि उसे संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपने मुक़ाबले में तुच्छ बल्कि कीड़ा-मकौड़ा नज़र आने लगता है। उस समय दिन भर का हँसमुख और सरल-स्वभाव 'साहिर' एकदम बदल जाता है। दिन-भर की बातें (जिनका उसे एक-एक शब्द याद हो चुका होता हैं) दोहरा-दोहरा कर वह अपने मित्रों की मूढ़ता और आत्म-श्लाघा पर (जिसकी सुबह वह प्रशंसा कर चुका होता है) व्यंग के तीर छोड़ता है। 'क्या पिद्दी क्या पिद्दी का शोरबा' कह-कर उनका मज़ाक़ उड़ाता है और निश्चय करता है कि आइंदा

१. 'दीवारों के कान तो होते हैं पर ज़बान नहीं,' इसलिए अपनी कभी समाप्त न होने वाली बातें सुनाने और हामी भरवाने के लिए 'साहिर' एक-आध मित्र को स्थायी रूप से अपने साथ रखता है। उसका पूरा खर्च उठाता है और सिवाय 'सुनने के कष्ट' के उसे और कोई कष्ट नहीं होने देता।

वह कभी 'बुक़रात' क़िस्म के इन मित्रों पर अपना पैसा और समय बर्बाद नहीं करेगा लेकिन दूसरे ही दिन जब उन मित्रों पर उसकी नज़र पड़ती है, वह लपक कर उन्हें बाहुपाश में ले लेता है, उन्हें चाय पिलाता है, खाना खिलाता है, सिनेमा दिखाता है और उनकी मूढ़ता और आत्म-श्लाघा की प्रशंसा करके आप-ही-आप एक प्रश्न-चिह्न बन जाता है।

यह प्रश्न-चिह्न रास्ता चलते-चलते कभी बहुत आगे निकल जाता है, कभी बहुत पीछे रह जाता है। एक ज़रा-सी बात पर उकता जाना, शर्मा जाना, घबरा जाना उसका स्वभाव है। और जहां तक कोई निर्णय करने का सम्बन्ध है, जीवन की बड़ी-बड़ी समस्याएँ तो क्या, किसी मुशायरे में नज़्म या ग़ज़ल सुनाने से पहले वह यह भी निर्णय नहीं कर पाता कि उस समय उसे क्या चीज़ सुनानी चाहिये। यहां तक कि किस क़मीज़ पर वह कौनसी पतलून पहने और नाश्ते में पराठे और आमलेट खाये या तोस-मक्खन—इसके लिए भी उसे अपनी अम्मी या पास बैठे किसी 'स्थायी' या 'अस्थायी' मित्र की सहायता लेनी पड़ती है और शायद इसीलिए वह अब तक शादी नहीं कर सका। दूसरों की पसंद की हुई लड़कियां वह पसंद नहीं करना चाहता और स्वयं पसंद करने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

'साहिर' की इन आदतों के कारण, जिन्हें मैं बनावट समझता था, कभी-कभी हम में ठन भी जाती थी। मैं महसूस करता कि वह मुझे मुफ़्तों-मुफ़्त 'धर्मयोद्धा' बनाये चला जा

रहा है और मैं चूंकि क़ीमतन भी इसके लिए तैयार न था इसलिए उसका मज़ाक़ उड़ाने और उसे नीचा दिखाने का कोई अवसर हाथ से न जाने देता था। वह अपनी किसी नज़्म की महानता मनवाने के लिए अभी भूमिका ही बांध रहा होता कि मैं अपनी किसी लम्बी-चौड़ी कहानी का प्लाट सुनाकर चेखव, गोर्की या मोपासां से अपनी तुलना शुरू कर देता। वह लिबास के बारे में मेरी राय लेता तो बड़ी गंभीरता से कपड़े छांटकर मैं उसे अच्छा-खासा कार्टून बना देता और नाश्ता तो मैंने उसे कई बार आइसक्रीम तक का भी करवाया। लेकिन फिर धीरे-धीरे यह वास्तविकता मुझ पर प्रकट होती गई कि वह मज़ाक़ का नहीं दया का पात्र है। वे आदतें उसने स्वयं नहीं पालीं, खुदरौ पौधे की तरह खुद-बखुद पल गई हैं। और इनकी तह में काम करती हैं वे दुखद परिस्थितियां जिनमें उसने आंख खोली, परवान चढ़ा और जो अपने समस्त गुणों एवं अवगुणों के साथ उसके व्यक्तित्व का अंग बन गई।

'साहिर' १९२२ ई० में लुधियाना के एक जागीरदार घराने में पैदा हुआ। माता के अतिरिक्त उसके पिता की कई पत्नियां और भी थीं। किन्तु एकमात्र संतान होने के कारण उसका पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यार में हुआ। मगर अभी वह बच्चा ही था कि सुख-वैभव के उस जीवन के दरवाजे एका-एक उस पर बंद हो गये। पति की अय्याशियों से तंग आकर उसकी माता ने उससे तलाक़ ले लिया और चूंकि 'साहिर' ने कचहरी में पिता पर माता को प्रधानता दी थी इसलिए उसके

बाद पिता से और उसकी जागीर से उसका कोई सम्बन्ध न रहा और इसके साथ ही जीवन की ताबड़तोड़ कठिनाइयों और निराशाओं का दौर शुरू हो गया। ऐशो-आराम का जीवन छिन तो गया पर अभिलाषा बाक़ी रही। नौबत माता के जेवरों के बिकने तक आगई, पर दंभ बना रहा और चूंकि मुक़दमा हारने पर पिता ने यह धमकी दे दी थी कि वह 'साहिर' को मरवा डालेगा या कम से कम माँ के पास न रहने देगा, इसलिए ममता की मारी माँ ने रक्षक किसम के ऐसे लोग 'साहिर' पर नियुक्त कर दिये जो क्षण-भर को भी उसे अकेला न छोड़ते थे। इस तरह घृणा-भाव के साथ-साथ उसके मन में एक विचित्र प्रकार का भय भी पनपता रहा। परिणाम स्वरूप उसमें विभिन्न मानसिक उलझनें पैदा हो गईं। उसने प्रेम किया और निर्धनता, साहस के अभाव और सामाजिक बंधनों के कारण विफल रहा और इसी कारण से कालेज से भी निकाल दिया गया और फिर इच्छा और स्वभाव के प्रतिकूल उसे अपना और अपनी माता का पेट पालने के लिए तरह-तरह की छोटी-छोटी नौकरियां करनी पड़ीं। सिसक-सिसक और सुलग-सुलग कर उसने दिनों को धक्के दिये। क़दम-क़दम पर हर्ष और विषाद में संघर्ष हुआ। यह संघर्ष बुद्धि और भावुकता में भी हुआ और जीवन और मृत्यु में भी; और यही वह संघर्ष था जिसने उसे अब्दुलहयी से 'साहिर' बना दिया, और उसके मन-मस्तिष्क की सारी 'तल्ख़ियाँ' शेरों का लिबास पहनकर बाहर निकल पड़ीं।

शायर की हैसियत से 'साहिर' ने उस समय आंख खोली जब 'इक़बाल' और 'जोश' के बाद 'फ़िराक़' 'फ़ैज़' और 'मजाज़' आदि के नग़मों से न केवल लोग परिचित हो चुके थे बल्कि शायरी के मैदान में इनका तूती बोलता था। ऐसे काल में, ज़ाहिर है, कोई भी नया शायर अपने इन सिद्धहस्त समकालीनों से प्रभावित हुए बिना न रह सकता था। अतएव 'साहिर' पर भी 'मजाज़' और 'फ़ैज़' का ख़ासा प्रभाव पड़ा। बल्कि शुरू-शुरू में तो लोगों को उसकी शायरी पर 'फ़ैज़' के अनुकरण का सन्देह हुआ—वही नर्मो-नाज़ुक स्वर, वही शब्दों की सुन्दर तराश-ख़राश और वही नींद में डूबा हुआ-सा वातावरण। लेकिन उसके व्यक्तिगत अनुभव आड़े आये, उस वर्ग के प्रति घृणा तथा विद्रोह की आप-ही-आप मुड़ी हुई विचारों की धारा काम आई, जिसका एक पात्र उसका पिता और दूसरा उसकी प्रेमिका का पिता था और सांसारिक दुखों में तप कर निकली हुई चेतना ने उसे मार्ग सुझाया और लोगों ने देखा कि 'फ़ैज़' या 'मजाज़' का अनुकरण करने की बजाय 'साहिर' की रचनाओं पर उसके व्यक्तिगत अनुभवों की छाप है और उनका अपना एक अलग रंग भी है। यह 'साहिर' की व्यक्तिगत परिस्थितियां ही उससे कहलवा सकती थीं :

मैं उन अजदाद का[1] बेटा हूं जिन्होंने पैहम[2],
अजनबी क़ौम के साये की हिमायत की है।
ग़दर की साअ़ते-नापाक[3] से लेकर अब तक,
हर कड़े वक्त में सरकार की ख़िदमत की है॥

१. बुज़ुर्गों का २. निरंतर ३. अशुभ घड़ी

और यह भी उसी की मनःस्थिति थी जो शब्दों के इस चित्र में प्रकट हुई :

न कोई जादह[1], न मंज़िल, न रोशनी, न सुराग़,
भटक रही है ख़लाओं में[2] ज़िन्दगी मेरी,
इन्हीं ख़लाओं में रह जाऊंगा कभी खोकर,
मैं जानता हूं मेरी हमनफ़स[3] मगर यूंही,
कभी-कभी मेरे दिल में ख़याल आता है !
कि ज़िन्दगी तेरी जुल्फ़ों की नर्म छाओं में,
गुज़रने पाती तो शादाब हो भी सकती थी।
ये तीरगी[4] जो मेरी ज़ीस्त का[5] मुक़द्दर[6] है,
तेरी नज़र की शुआओं में खो भी सकती थी ॥

और मैं समझता हूं कि 'साहिर' को जो अपने बहुत से समकालीन शायरों से अलग और उच्च स्थान प्राप्त हुआ, उसका बुनियादी कारण उसके यही अनुभव तथा प्रेक्षण हैं जिनमें किसी प्रकार का मिश्रण करने की बजाय (कलात्मक शृङ्गार के अतिरिक्त) उसने उन्हें ज्यों का त्यों प्रस्तुत किया। प्रेम के दुख-दर्द के अलावा समाज के प्रति जो विष तथा कटुता हमें उसकी शायरी में मिलती है, वह मांगे की नहीं, उसके अपने ही पीड़ित जीवन की प्रतिध्वनि है।

'साहिर' बुनियादी तौर पर रोमांटिक शायर है। प्रेम की असफलता ने उसके दिलो-दिमाग़ पर इतनी कड़ी चोट लगाई

---

१. मार्ग २. शून्य में ३. सहचर ४. अंधेरा ५. जीवन का ६. भाग्य

कि जीवन की अन्य चिन्ताएं पीछे जा पड़ीं। राहों में 'हरीरी मलबूस'[1] देखकर 'सर्द आहों' में अपनी प्रेमिका को याद करने के सिवाय उसे कुछ सूझता ही न था। हर समय उसे अपनी आंखों पर अपनी प्रेमिका की झुकी हुई पलकों का साया महसूस होता और वह तड़प-तड़प कर उससे पूछने लगता :

मेरे ख़्वाबों के झरोकों को सजाने वाली,
तेरे ख़्वाबों में कहीं मेरा गुज़र है कि नहीं ?
पूछकर अपनी निगाहों से बतादे मुझको,
मेरी रातों के मुक़द्दर में[2] सहर[3] है कि नहीं ?

और

मेरी दरमांदह[4] जवानी की तमन्नाओं के,
मुज़महिल ख़्वाब[5] की ताबीर[6] बतादे मुझ को।
तेरे दामन में गुलिस्तां भी हैं वीराने भी,
मेरा हासिल, मेरी तक़दीर बतादे मुझ को॥

और संभव था कि आयु-भर अपनी प्रेमिका से वह इसी प्रकार के प्रश्न करता रहता और मुनासिब उत्तर न पाने पर निराशा तथा शोक की घनी और घिनौनी छांव में जा आश्रय लेता और नारी के प्रेम से शुरू होने वाली उसकी शायरी नारी के प्रेम तक ही सीमित होकर रह जाती, लेकिन बार-बार प्रश्न करने पर भी जब उसे कोई दो-टूक उत्तर न मिला (बल्कि हर उत्तर नये प्रश्न के रूप में सामने आने लगा)

---

१. रेशमी वस्त्र २. भाग्य में ३. सुबह ४. विवश
५. दुखद स्वप्न ६. स्वप्न-फल

तो इस तकरार से घबराकर उसने सोचने की आदत डाली। ऐसा क्यों हुआ ? ऐसा क्यों होता है ? और वह इस परिणाम पर आ पहुंचा कि ऐसा नहीं होना चाहिए। और यों उसका व्यक्तिगत प्रेम विभिन्न मंज़िलें तय करता हुआ अन्त में उस बिन्दु पर पहुंच गया जहाँ व्यक्तिगत-प्रेम सामूहिक-प्रेम में बदल जाता है और शायद अपनी प्रेमिका का ही नहीं मनुष्य-मात्र का आशिक़ बन जाता है और :

तुझको ख़बर नहीं मगर इक सादा-लौह को,
बर्बाद कर दिया तेरे दो दिन के प्यार ने।

कहते-कहते पहले अपनी प्रेमिका से दबी आवाज़ में कहता है :

मैं और तुम से तर्के-मुहब्बत की[1] आरज़ू,
दीवाना कर दिया है ग़मे-रोज़गार ने[2]।

और फिर बड़े स्पष्ट शब्दों में कह उठता है :

तुम्हारे ग़म के सिवा और भी तो ग़म हैं मुझे,
निजात[3] जिन से मैं एक लहज़ा[4] पा नहीं सकता !
ये ऊँचे-ऊँचे मकानों की ड्योढ़ियों के तले,
हर एक गाम पे[5] भूखे भिखारियों की सदा,
ये कारख़ानों में लोहे का शोरो-गुल जिस में,
है दफ़न हज़ारों ग़रीबों की रूह का नग़मा,
गली गली में ये बिकते हुए जवां चेहरे,
हसीन आंखों में अफ़सुर्दगी[6] सी छाई हुई,

१. मुहब्बत न करने की २. सांसारिक चिंताओं ने ३. मुक्ति ४. क्षण भर को भी ५. पग-पग पर ६. उदासी

ये शोलाबार फ़ज़ाएँ[1] , ये मेरे देश के लोग,
ख़रीदी जाती हैं उठती जवानियां जिन की
.....

ये ग़म बहुत हैं मेरी ज़िन्दगी मिटाने को,
उदास रह के मेरे दिल को और रंज न दो,
तुम्हारे ग़म के सिवा और भी तो ग़म हैं मुझे।

और यहीं पर बस नहीं, उसकी घायल आत्मा ने ज्यों-ज्यों उसे तड़पाया, उसमें इन 'ग़मों' से जूझने, इन पर विजय पाने और इन्हें सुखों में परिवर्तित करने की ज़िद सी पैदा हो गई। और अपनी इसी ज़िद में उसने उन समस्त विषयों को पकड़ में लेने का प्रयत्न किया जो उसके और इस शताब्दि के समक्ष हैं। यद्यपि कुछेक को शायरी का वैसा सुन्दर लिबास पहनाने में वह इतना सफल नहीं हुआ जितना कि अपने विशेष विषय 'प्रेम' को, और कहीं-कहीं तो भावावेश में वह अपनी सीमाओं से इतना बाहर निकल गया कि आश्चर्य होता है, जीवन भर स्वयं को शायर मनवाने का प्रयत्न करने वाला 'साहिर' क्यों इस बात का आग्रह कर रहा है कि 'लोग मुझे फ़नकार न मानें' और जब उसने प्रतिज्ञा की कि :

आज से ऐ मज़दूर किसानो ! मेरे राग तुम्हारे हैं,
फ़ाक़ाकश इन्सानो ! मेरे जोग बिहाग तुम्हारे हैं।

और

आज से मेरे फ़न का मक़सद ज़ंजीरें पिघलाना है,
आज से मैं शबनम के बदले अंगारे बरसाऊंगा।

---

१. आग बरसाता हुआ वातावरण

तो सन्देह सा हुआ कि क्या सचमुच 'साहिर' इतनी कड़ी प्रतिज्ञा कर रहा है और क्या स्थायी रूप से वह अपनी इस प्रतिज्ञा पर दृढ़ रह सकेगा ? क्या अब वह कभी ऐसे गीत न गाएगा जिनमें :

.....उम्मीद भी थी पसपाई भी,
मौत के क़दमों की आहट भी, जीवन की अँगड़ाई भी।
मुस्तक़बिल की किरणें भी थीं हाल की बोझल ज़ुलमत[1] भी,
तूफ़ानों का शोर भी था और ख़्वाबों की शहनाई भी।

अर्थात् जीवन का एक पहलू ही नहीं समस्त रंग विद्यमान रहें।

सौभाग्य से 'साहिर' उर्दू ग़ज़ल का रिवायती महबूब सिद्ध होता है और अपनी प्रतिज्ञा से फिर जाता है। फिरता नहीं तो दामन ज़रूर बचाता है और यहां-वहां दो चार जलवे दिखाने के बाद वापस अपने बुतखाने या सीमाओं में लौट आता है। उसे अनुभव हो जाता है कि उसका काम 'परचम लहराना' नहीं 'बरबत पर गाना' है[2]।

'साहिर' की शायरी पर बहस करते हुए उर्दू के एक प्रसिद्ध शायर 'कैफ़ी आज़मी' ने, जिन्हें कम्यूनिस्ट पार्टी के एक ज़िम्मेदार नेता ने उर्दू शायरी का 'सुर्ख-फूल' कहा था, 'साहिर' के बरबत पर गाने और साथी के परचम लहराने पर आक्षेप

---

१. अंधकार

२. तुम से कुव्वत लेकर अब मैं तुमको राह दिखाऊंगा,
तुम परचम लहराना साथी, मैं बरबत पर गाऊंगा।

करते हुए एक स्थान पर लिखा था कि भावना और कर्म के इसी भेद ने 'साहिर' के जीवन में अराजकता और कला में उदासीनता पैदा कर दी है। इस प्रकार के कुछ और परिणाम भी उन्होंने निकाले थे और इस स्वीकारोक्ति के बावजूद कि 'साहिर मौलिक रूप से प्रगतिशील और प्रगतिशील शक्तियों का साथी है', उन्होंने कुछ इस ढंग से 'साहिर' को एक-साथ परचम लहराने और बरबत पर गाने का परामर्श दिया था कि मालूम होता था, उनकी नज़र में बरबत का उतना महत्व नहीं, जितना कि परचम का।

परचम का अपना महत्व है और बरबत का अपना, और इतिहास साक्षी है कि बरबत बजाने वाले हाथों ने जब भावावेश में आकर, या किसी भी कारण से, बरबत के साथ-साथ परचम उठाने का प्रयत्न किया तो बरबत भी टूट गया और परचम भी न लहरा सका। और यह तो सरासर ग़लत प्रवृत्ति है कि केवल मज़दूरों और किसानों के बारे में लिखकर ही कोई लेखक अपने आपको प्रगतिशील लेखक कहलवाने का अधिकारी बन जाए। हमारा समाज विभिन्न वर्गों में विभाजित है और हमारे कलाकार अलग-अलग वर्गों से आए हैं। यदि कोई लेखक किसी कारण से अपनी सीमाओं से बाहर नहीं निकल पाता, लेकिन हर लिहाज़ से प्रौढ़ है, तो अपनी सीमाओं में रहते हुए भी वह स्वस्थ, आदर्शवादी तथा प्रगतिशील साहित्य रच सकता है। बोरज़ुवा और ऊंचे मध्य वर्ग का लेखक अपने वर्ग की बेअमली और बेराहरवी दर्शाकर उतना

ही बड़ा कार्य सिद्ध कर सकता है जितना कि वर्ग-संग्राम में सीधा योग देने वाला कोई मज़दूर या किसान। इसके प्रतिकूल अपनी सीमाओं में रहते हुए यदि कोई कवि या लेखक, फ़ैशन के तौर पर, यह जाने बिना कि कपड़ा बुनने की मशीन के पास मज़दूर खड़ा होकर काम करता है या लेटकर, या धान किस ऋतु में बोया जाता है और गेहूँ की बालियों का क्या रंग होता है, मज़दूर और किसान पर क़लम उठाएगा तो उस की रचना में वे गुण न आ पाएंगे जो अनुभव और प्रेक्षण पर आधारित और अनिवार्य रूप से महान साहित्य की नींव होते हैं। सौभाग्य से 'साहिर' सामूहिक रूप से हमें वही देता है जो 'तजुर्बातो-हवादिस' की शक्ल में दुनिया ने उसे दिया।

पिछले आठ वर्षों से 'साहिर' बम्बई में है और कैफ़ी आज़मी ही के कथनानुसार आजकल फ़िल्मी दुनियां पर जितने ख़तरे मंडरा रहे हैं, 'साहिर' उन सबसे शदीद है। मालूम नहीं फ़िल्मी गीत लिखते-लिखते वह कब प्रोड्यूसर या डायरेक्टर बन जाए (क्योंकि आज उसके पास कार भी है और शानदार बंगला भी और नज़्में लिखना उसने बहुत हद तक छोड़ दिया है), लेकिन कैफ़ी आज़मी ही की तरह जब मैं पहली बार 'साहिर' से मिला था तो वह केवल शायर था और जब अंतिम बार मिलूंगा तो भी वह केवल शायर ही होगा क्योंकि अभी तक अपने पहनने के वस्त्रों का वह स्वयं चुनाव नहीं कर सकता और उसे जितनी अधिक ख्याति प्राप्त हो रही है, उससे कहीं अधिक वह यह महसूस कर रहा है कि शायर की हैसियत से उसकी सर्वप्रियता कम हो रही है।

चयन

मताअ़े-ग़ैर[1]

मेरे ख़्वाबों के झरोकों को सजाने वाली,
तेरे ख़्वाबों में कहीं मेरा गुज़र है कि नहीं ?
पूछ कर अपनी निगाहों से बता दे मुझको,
मेरी रातों के मुक़द्दर[2] में सहर[3] है कि नहीं ॥

चार दिन की ये रफ़ाक़त[4] जो रफ़ाक़त भी नहीं,
उम्र भर के लिए आज़ार[5] हुई जाती है।
ज़िन्दगी यूं तो हमेशा से परीशान सी-थी,
अब तो हर सांस गिरां-बार[6] हुई जाती है ॥

मेरी उजड़ी हुई नींदों के शबिस्तानों में[7],
तू किसी ख़्वाब के पैकर[8] की तरह आई है।
कभी अपनी-सी, कभी ग़ैर नज़र आती है,
कभी इख़लास[9] की मूरत, कभी हरजाई है ॥

प्यार पर बस तो नहीं है मेरा, लेकिन फिर भी,
तू बता दे कि तुझे प्यार करूं या न करूं ?
तू ने खुद अपने तबस्सुम से[10] जगाया है जिन्हें,
उन तमन्नाओं का इज़हार करूं या न करूं ?

तू किसी और के दामन की कली है, लेकिन,
मेरी रातें तेरी ख़ुशबू से बसी रहती हैं।
तू कहीं भी हो तेरे फूल-से आरिज़ की[11] क़सम,
तेरी पलकें मेरी आंखों पे झुकी रहती हैं ॥

---

१. ग़ैर की सम्पत्ति २. भाग्य ३. प्रभात ४. साथ ५. रोग ६. असह्य, बोझल ७. शयनागार में ८. शरीर ९. निःस्वार्थता १०. मुस्कराहट से ११. कपोल की

तेरे हाथों की हरारत[1] , तेरे सांसों की महक,
तैरती रहती है अहसास की[2] पहनाई में[3] ।
ढूंढती रहती हैं तखईल की[4] बाँहें तुझको,
सर्द रातों की सुलगती हुई तनहाई में ।।

तेरा अलताफ़ो-करम[5] एक हक़ीक़त[6] है मगर,
ये हक़ीक़त भी हक़ीक़त में फ़साना[7] ही न हो।
तेरी मानूस निगाहों का[8] ये मोहतात पयाम,
दिल के ख़ूं करने का एक और बहाना ही न हो ।।

कौन जाने मेरे इमरोज़ का[9] फ़र्दा[10] क्या है ?
क़ुरबतें[11] बढ़ के पशेमान[12] भी हो जाती हैं ।
दिल के दामन से लिपटती हुई रंगीं नज़रें,
देखते-देखते अनजान भी हो जाती हैं ।।

मेरी दरमांदह[13] जवानी की तमन्नाओं के,
मुज़महिल[14] ख़्वाब की ताबीर[15] बता दे मुझको।
तेरे दामन में गुलिस्तां भी हैं, वीराने भी,
मेरा हासिल[16], मेरी तक़दीर बतादे मुझको ।।

---

१. गर्मी २. चेतना की ३. विस्तीर्णता में ४. कल्पना की
५. कृपा, अनुकंपा ६. वास्तविकता ७. कहानी ८. इष्ट नज़रों का
९. आज का १०. कल ११. सामीप्य, प्रेम १२. लज्जित
१३. विवश १४. आकुल १५. स्वप्न-फल १६. प्राप्ति

रद्दे-अमल

चन्द कलियां निशात की[1] चुन कर,
मुद्दतों महवे-यास[2] रहता हूँ।
तेरा मिलना खुशी की बात सही,
तुझसे मिलकर उदास रहता हूँ॥

एक मंज़र

उफ़क़ के[3] दरीचे से किरणों ने झांका,
फ़ज़ा[4] तन गई रास्ते मुस्कराये।
सिमटने लगी नर्म कुहरे की चादर,
जवां शाख़सारों ने[5] घूँघट उठाये।
परिन्दों की आवाज़ से खेत चौंके,
पुर-असरार[6] लय में रहट गुनगुनाये।
हसीं शबनम-आलूद[7] पगडंडियों से,
लिपटने लगे सब्ज़ पेड़ों के साये।
वो दूर एक टीले पे आंचल सा झलका।
तसव्वुर में[8] लाखों दिये झिलमिलाये॥

---

१. हर्ष की २. निराशा में मग्न ३. क्षितिज के ४. वातावरण
५. जवान वृक्षपुञ्जों ने ६. रहस्यपूर्ण ७. ओस भरी ८. कल्पना में

एक वाक़या

अँधियारी रात के आंगन में ये सुबह के क़दमों की आहट,
ये भीगी-भीगी सर्द हवा, ये हल्की-हल्की धुंदलाहट।

गाड़ी में हूँ तनहा महवे-सफ़र[1] और नींद नहीं है आंखों में,
भूले-बिसरे रूमानों के ख़्वाबों की ज़मीं है आंखों में।

अगले दिन हाथ हिलाते हैं, पिछली पीतें याद आती हैं,
गुमगश्ता[2] खुशियाँ आंखों में आँसू बनकर लहराती हैं।

सीने के वीरां गोशे में इक टीस सी करवट लेती है,
नाकाम उमंगें रोती हैं उम्मीद सहारे देती है।

वो राहें ज़हन में[3] घूमती हैं जिन राहों से आज आया हूं,
कितनी उम्मीद से पहुँचा था, कितनी मायूसी लाया हूँ।

---

१. यात्रा-मग्न २. खोई हुई ३. मस्तिष्क में

शहकार[1]

मुसव्विर[2] ! मैं तेरा शहकार वापस करने आया हूँ !

अब इन रंगीन रुखसारों में[3] थोड़ी ज़र्दियां भरदे,
हिजाब-आलूद[4] नज़रों में ज़रा बेबाकियाँ भरदे।

लबों की[5] भीगी-भीगी सलवटों को मुज़महिल[6] करदे,
नुमायां रंगे-पेशानी पे[7] अक्से-सोज़े-दिल[8] करदे।

तबस्सुम-आफ़रीं[9] चेहरे में कुछ संजीदापन भरदे,
जवां सीने की मखरूती[10] उठानें सरनिगूं[11] करदे।

घने बालों को कम करदे मगर रखशिंदगी[12] देदे,
नज़र से तमकनत[13] लेकर मज़ाक़े आजिज़ी[14]देदे।

मगर हां बैंच के बदले इसे सोफ़े पे बिठलादे,
यहाँ मेरी बजाये इक चमकती कार दिखलादे॥

१. महान कलाकृति २. चित्रकार ३. कपोलों में ४. लज्जा-शील ५. होंटों की ६. व्याकुल ७. माथे के रंग पर ८. हृदय की जलन का प्रतिबिम्ब ९. मुस्कराते १०. गोल तथा नोकीली ११. नतमस्तक १२. चमक १३. अभिमान १४. विनयशीलता

ख़ाना-आबादी

(एक दोस्त की शादी पर)

तराने गूँज उट्ठे हैं फ़ज़ा में शादियानों के,
हवा है इत्र-आगीं,[1] ज़र्रा-ज़र्रा मुस्कराता है।

मगर दूर एक अफ़सुर्दह[2]-मकां में सर्द बिस्तर पर,
कोई दिल है कि हर आहट पे यूँही चौंक जाता है।

मेरी आंखों में आँसू आगये 'नादीदह आँखों' के[3],
मेरे दिल में कोई ग़मगीन नग़्मा सरसराता है।

ये रस्मे-इनक़िताए-अहदे-उलफ़त[4], ये हयाते-नौ[5],
मुहब्बत रो रही है, और तमद्दुन[6] मुस्कराता है।

ये शादी ख़ाना-आबादी हो, मेरे मोहतरिम[7] भाई।
'मुबारिक' कह नहीं सकता, मेरा दिल कांप जाता है।

---

१. सुगंधित २. उदास ३. अनदेखी आँखों के ४. प्रेम-काल की समाप्ति की रस्म ५. नवजीवन ६. संस्कृति ७. आदरणीय

शिकस्त

अपने सीने से लगाये हुए उम्मीद की लाश,
मुद्दतों ज़ीस्त को[1] नाशाद[2] किया है मैंने।

तूने तो एक ही सदमे से किया था दो-चार,
दिल को हर तरह से बर्बाद किया है मैंने।
जब भी राहों में नज़र आये हरीरी मलबूस[3],
सर्द आहों में तुझे याद किया है मैंने।

और अब जब कि मेरी रूह की पहनाई में,[4]
एक सुनसान सी मग़मूम[5] घटा छाई है।
तू दमकते हुए आरिज़ की[6] शुआयें[7] लेकर,
गुलशुदा[8] शमअें जलाने को चली आई है।

मेरी महबूब, ये हंगामा-ए-तजदीदे-वफ़ा[9],
मेरी अफ़सुर्दह[10] जवानी के लिए रास नहीं।
मैंने जो फूल चुने थे तेरे कदमों के लिए,
उनका धुंदला-सा तसव्वुर[11] भी मेरे पास नहीं।

एक यख़बस्ता[12] उदासी है दिलो-जां पे मुहीत[13],
अब मेरी रूह में बाक़ी है न उम्मीद न जोश।

---

१. जीवन को २. खिन्न ३. रेशमी लिबास ४. आत्मा की विस्तीर्णता में ५. दुखी ६. कपोलों की ७. रश्मियाँ ८. बुझी हुई ९. प्रेम के नवीकरण का हंगामा १०. उदास, बुझी हुई ११. कल्पना १२. बर्फ की तरह जमी हुई १३. छाई हुई

रह गया दब के गिरांबार सलासिल के[1] तले,
मेरी दरमांदह[2] जवानी की उमंगों का खरोश[3] ।

रेगज़ारों में[4] बगूलों के सिवा कुछ भी नहीं,
साया - ए - अब्र - गुरेज़ां से[5] मुझे क्या लेना ?
बुझ चुके हैं मेरे सीने में मुहब्बत के कंवल,
अब तेरे हुस्ने-पशेमां[6] मुझे क्या लेना ?

तेरे आरिज़ पे ये ढलके हुए सीमीं[7] आँसू,
मेरी अफ़सुर्दगी-ए-ग़म का[8] मुदावा[9] तो नहीं ।
तेरी महजूब निगाहों का[10] पयामे तजदीद[11],
इक तलाफ़ी[12] ही सही, मेरी तमन्ना तो नहीं ।।

---

१. बोझल ज़ंजीरों के २. विवश ३. जोश ४. मरुस्थलों में ५. भागते हुए बादल की छाया से ६. लज्जित सौन्दर्य से ७. रजत ८. ग़म की उदासी का ९. इलाज १०. लज्जित नजरों का ११. नवीकरण का संदेश १२. क्षतिपूर्ति

किसी को उदास देखकर !

तुम्हें उदास सी पाता हूँ मैं कई दिन से,
न जाने कौनसे सदमे उठा रही हो तुम।
वो शोख़ियां वो तबस्सुम, वो क़हक़हे न रहे,
हर एक चीज़ को हसरत से देखती हो तुम।
छुपा-छुपा के ख़मोशी में अपनी बेचैनी,
ख़ुद अपने राज़ की तशहीर[1] बन गई हो तुम।

मेरी उम्मीद अगर मिट गई तो मिटने दो,
उम्मीद क्या है बस इक पेशो-पस[2] है कुछ भी नहीं।
मेरी हयात की ग़मगीनियों का ग़म न करो,
ग़मे-हयात[3] ग़मे-यक-नफ़स[4] है कुछ भी नहीं।
तुम अपने हुस्न की रअ़नाइयों पे[5] रहम करो,
वफ़ा फ़रेब है, तूले-हवस[6] है कुछ भी नहीं।

मुझे तुम्हारे तग़ाफ़ुल से[7] क्यों शिकायत हो ?
मेरी फ़ना[8] मेरे एहसास का[9] तक़ाज़ा है।
मैं जानता हूँ कि दुनिया का ख़ौफ़ है तुमको,
मुझे ख़बर है, ये दुनिया अजीब दुनिया है।
यहां हयात के पर्दे में मौत पलती है,
शिकस्ते-साज़ की[10] आवाज़ रूहे-नग़मा है।

---

१. विज्ञापन २. दुविधा ३. जीवन का ग़म ४. क्षणभर का ग़म (एक श्वास से सम्बंधित) ५. रमणीयताओं पर ६. लोलुपता का विस्तार ७. उपेक्षा ८. नाश ९. चेतना का १०. साज़ के टूटने की

मुझे तुम्हारी जुदाई का कोई रंज नहीं,
मेरे ख़याल की दुनिया में मेरे पास हो तुम।
ये तुमने ठीक कहा है, तुम्हें मिला न करूं,
मगर मुझे ये बता दो कि क्यों उदास हो तुम ?
ख़फ़ा न होना मेरी जुर्रते-तख़ातब पर[1],
तुम्हें ख़बर है मेरी ज़िन्दगी की आस हो तुम।

मेरा तो कुछ भी नहीं है मैं रो के जी लूंगा,
मगर ख़ुदा के लिए तुम असीरे-ग़म[2] न रहो।
हुआ ही क्या जो ज़माने ने तुम को छीन लिया,
यहां पे कौन हुआ है किसी का सोचो तो।
मुझे क़सम है मेरी दुख भरी जवानी की,
मैं खुश हूँ मेरी मुहब्बत के फूल ठुकरा दो।

मैं अपनी रूह की हर इक खुशी मिटा लूंगा,
मगर तुम्हारी मुसर्रत मिटा नहीं सकता।
मैं खुद को मौत के हाथों में सौंप सकता हूँ,
मगर ये बारे-मसाइब[3] उठा नहीं सकता।
तुम्हारे ग़म के सिवा और भी तो ग़म हैं मुझे,
निजात जिन से मैं इक लहज़ा[4] पा नहीं सकता।

---

१. संबोधन के दुःसाहस पर २. शोकग्रस्त ३. मुसीबतों का बोझ ४. क्षण भर के लिए।

ये ऊंचे-ऊंचे मकानों की ड्योढ़ियों के तले,
हर एक गाम पे[1] भूखे भिखारियों की सदा[2] ।
हर एक घर में ये इफ़लास और भूख का शोर,
हर एक सिम्त[3] ये इन्सानियत की आहो-बुक़ा[4] ।
ये कारख़ानों में लोहे का शोरो-गुल जिस में,
है दफ़्न लाखों ग़रीबों की रूह का नग़मा ।

ये शाहराहों पे[5] रंगीन सारियों की झलक,
ये झोपड़ों में ग़रीबों के बेकफ़न लाशे ।
ये माल-रोड पे कारों की रेल-पेल का शोर,
ये पटरियों पे ग़रीबों के ज़र्दरू[6] बच्चे ।

'गली-गली में ये बिकते हुए जवां चेहरे,
हसीन आंखों में अफ़सुर्दगी-सी[7] छाई हुई ।
ये जंग और ये मेरे वतन के शोख़ जवां,
ख़रीदी जाती हैं उठती जवानियां जिनकी ।
ये बात-बात पे क़ानूनी-ज़ाब्ते की गिरफ़्त[8] ,
ये ज़िल्लतें, ये गुलामी, ये दौरे-मजबूरी ।'

ये ग़म बहुत हैं मेरी ज़िन्दगी मिटाने को,
उदास रहके मेरे दिल को और रंज न दो !

---

१. क़दम पर २. आवाज़ ३. ओर ४. आहों का शोर ५. राजपथों पर ६. पीले चेहरे वाले ७. उदासी- सी ८. पकड़ ।

सोचता हूं

सोचता हूँ कि मुहब्बत से किनारा कर लूं
दिल को बेगाना-ए-तरग़ीबो-तमन्ना[1] कर लूं

सोचता हूँ कि मुहब्बत है जुनूने-रुसवा[2]
चंद बेकार से बेहूदा ख़यालों का हुजूम
एक आज़ाद को पाबंद बनाने की हवस
एक बेगाने को अपनाने की सअ़इ-ए-मौहूम[3]।

सोचता हूं कि मुहब्बत है सरूरो-मस्ती
इस की तनवीर से[4] रौशन है फ़ज़ाये-हस्ती[5]

सोचता हूं कि मुहब्बत है बशर की फ़ितरत[6]
इसका मिट जाना, मिटा देना बहुत मुश्किल है
सोचता हूं कि मुहब्बत से है ताबिंदा[7] हयात[8]
आप ये शमअ़ बुझा देना बहुत मुश्किल है।

---

१. अभिलाषा तथा प्रेरणा रहित २. बदनाम उन्माद ३. भ्रमात्मक प्रयत्न ४. प्रकाश ५. जीवन-रूपी वातावरण ६. मानव-स्वभाव ७. दीप्त ८. जीवन

सोचता हूं कि मुहब्बत पे कड़ी शर्तें हैं
इस तमद्दुन में[1] मुसर्रत पे बड़ी शर्तें हैं

सोचता हूं कि मुहब्बत है इक अफ़सुर्दह सी लाश
चादरे-इज़्ज़तो-नामूस में[2] कफ़नाई हुई
दौरे-सरमाया[3] की रौंदी हुई रुसवा हस्ती
दरगहे-मज़हबो-इखलाक़ से[4] ठुकराई हुई।

सोचता हूं कि बशर[5] और मुहब्बत का जुनूं
ऐसे बोसीदा तमद्दुन में है इक कारे-ज़बूं[6]

सोचता हूं कि मुहब्बत न बचेगी ज़िंदा
पेश-अज़-वक्त कि[7] सड़ जाए ये गलती हुई लाश
यही बेहतर है कि बेगाना-ए-उलफ़त[8] होकर
अपने सीने में करूं जज़्बा-ए-नफ़रत की[9] तलाश।

और सौदा-ए-मुहब्बत[10] से किनारा कर लूं,
दिल को बेगाना-ए-तरग़ीबो-तमन्ना कर लूं ॥

---

१. सभ्यता में २. इज़्ज़त-रूपी चादर में ३ पूंजी (के आधिपत्य) के युग ४. धर्म तथा नैतिकता की कचहरी से ५. मनुष्य ६. बुरा कार्य ७. इससे पूर्व कि ८. प्रेम से हाथ खींच कर ९. घृणा-भाव १०. प्रेमोन्माद

मुझे सोचने दे !

मेरी नाकाम मुहब्बत की कहानी मत छेड़,
अपनी मायूस उमंगों का फ़साना न सुना !

ज़िन्दगी तल्ख़ सही, ज़हर सही, सम[1] ही सही,
दर्दो-आज़ार[2] सही, जब्र सही, ग़म ही सही।
लेकिन इस दर्दो-ग़मो-जब्र[3] की वुसअ़त[4] को तो देख,
ज़ुल्म की छांओं में दम तोड़ती ख़लक़त को तो देख।
अपनी मायूस उमंगों का फ़साना न सुना,
मेरी नाकाम मुहब्बत की कहानी मत छेड़।

जलसागाहों में ये दहशतज़दह[5] सहमे अंबोह[6],
रहगुज़ारों पे फ़लाकत-ज़दह[7] लोगों के गिरोह।
भूख और प्यास से पज़मर्दा[8] सियहफ़ाम[9] ज़मीं,
तीरह-ओ-तार मकां[10] मुफ़लिसो-बीमार मकीं[11]।
नौ-ए-इन्सां में[12] ये सरमाया-ओ-मेहनत[13] का तज़ाद[14],
अमनो-तहज़ीब के परचम तले क़ौमों का फ़िसाद।
हर तरफ़ आतिशो-आहन का[15] ये सैलाबे-अज़ीम[16],
नित नये तर्ज़ पे होती हुई दुनिया तक़सीम।

---

१. विष २. पीड़ा तथा रोग ३. दर्द, ग़म, अत्याचार ४. विशालता ५. आतंकित ६. जनसमूह ७. निर्धनता के मारे हुए ८. म्लान ९. काली १०. तंग और अंधेरे मकान ११. वासी १२. मनुष्य १३. पूँजी तथा परिश्रम १४. संघर्ष, टकराव १५. आग और लोहे का १४. महान बाढ़

लहलहाते हुए खेतों पे जवानी का समा,
और दहक़ान[1] के छप्पर में न बत्ती न धुआं।
ये फ़लक-बोस[2] मिलें दिलकशो-सीमीं[3] बाज़ार,
ये ग़लाज़त पे[4] झपटते हुए भूखे नादार।
दूर साहिल पे वो शफ़्फ़ाफ़[5] मकानों की क़तार,
सरसराते हुए पर्दों में सिमटते गुलज़ार[6]।
दरो-दीवार पे अनवार का[7] सैलाबे-रवां[8],
जैसे इक शायरे-मदहोश[9] के ख़्वाबों का जहां।
ये सभी क्यों है ? ये क्या है ? मुझे कुछ सोचने दे,
कौन इन्सां का ख़ुदा है, मुझे कुछ सोचने दे।

अपनी मायूस उमंगों का फ़साना न सुना,
मेरी नाकाम मुहब्बत की कहानी मत छेड़।

---

१. किसान २. गगनचुम्बी ३. रजत ४. गंदगी ५. उज्ज्वल ६. पुष्पवाटिकायें ७. प्रकाश का ८. बहती बाढ़ ९. मदहोश शायर के

चकले

ये कूचे ये नीलामघर दिलकशी के,
ये लुटते हुए कारवां ज़िन्दगी के,
कहाँ हैं ? कहाँ हैं मुहाफ़िज़ ख़ुदी[1] के,
सना-ख़्वाने-तक़दीसे-मशरिक़[2] कहां हैं ?

ये पुरपेच गलियां, ये बेख़्वाब[3] बाज़ार,
ये गुमनाम राही, ये सिक्कों की झनकार,
ये इस्मत[4] के सौदे, ये सौदों पे तकरार,
सना-ख़्वाने-तक़दीसे-मशरिक़ कहां हैं ?

तअ़फ़्फ़ुन[5] से पुर नीम-रौशन[6] ये गलियां,
ये मसली हुई अधखिली ज़र्द कलियां,
ये बिकती हुई खोखली रंग-रलियां,
सना-ख़्वाने-तक़दीसे-मशरिक़ कहां हैं ?

वो उजले दरीचों में पायल की छन-छन,
तनफ़्फ़ुस[7] की उलझन पे तबले की धन-धन,
ये बेरूह कमरों में खाँसी की ढन-ढन
सना-ख़्वाने-तक़दीसे-मशरिक़ कहां हैं ?

---

१. अहं २. पूर्व की पवित्रता के गुण गाने वाले ३. निद्रा-रहित
४. सतीत्व ५. दुर्गन्ध ६. मद्धम प्रकाश वाली ७. श्वास

ये गूँजे हुए क़हक़हे रास्तों पर,
ये चारों तरफ़ भीड़ सी खिड़कियों पर,
ये आवाज़े खिंचते हुए आंचलों पर,
सना-ख़्वाने-तक़दीसे-मशरिक़ कहां हैं ?

ये फूलों के गजरे, ये पीकों के छींटे,
ये बेबाक नज़रें, ये गुस्ताख़ फ़िक़रे,
ये ढलके बदन और ये मदक़ूक़[1] चेहरे,
सना-ख़्वाने-तक़दीसे-मशरिक़ कहां हैं ?

ये भूखी निगाहें हसीनों की जानिब,
ये बढ़ते हुए हाथ सीनों की जानिब,
लपकते हुए पाँव ज़ीनों की जानिब,
सना-ख़्वाने-तक़दीसे-मशरिक़ कहाँ हैं ?

यहां पीर[2] भी आ चुके हैं जवां भी,
तनूमंद[3] बेटे भी अब्बा मियाँ भी,
ये बीवी भी है और बहन भी है मां भी,
सना-ख़्वाने-तक़दीसे-मशरिक़ कहां हैं ?

---

१. क्षयग्रस्त २. बूढ़े ३. हृष्टपुष्ट

ताज-महल

ताज तेरे लिए इक मज़हरे-उल्फ़त[1] ही सही,
तुझ को इस वादिये-रंगीं[2] से अक़ीदत[3] ही सही,
मेरी महबूब[4] कहीं और मिला कर मुझ से।

बज़्मे-शाही में[5] ग़रीबों का गुज़र, क्या मानी ?
सब्त[6] जिस राह पे हों सतवते-शाही के[7] निशां,
उस पे उल्फ़त भरी रूहों का[8] सफ़र क्या मानी ?

मेरी महबूब पसे-पर्दा-ए-तशहीरे-वफ़ा[9]
तूने सतवत[10] के निशानों को तो देखा होता,
मुर्दा शाहों के मक़ाबिर से[11] बहलने वाली !
अपने तारीक[12] मकानों को तो देखा होता।

अनगिनत लोगों ने दुनिया में मुहब्बत की है,
कौन कहता है कि सादिक़[13] न थे जज़्बे उनके ?
लेकिन उनके लिए तशहीर[14] का सामान नहीं,
क्योंकि वो लोग भी अपनी ही तरह मुफ़लिस[15] थे।

---

१. प्रेम का द्योतक २. रमणीय स्थान ३. श्रद्धा ४. प्रेयसी ५. शाही दरबार में ६. अंकित ७. शाही वैभव के ८. आत्माओं का (प्रेमियों का) ९. वफ़ा के विज्ञापन के पर्दे के पीछे १०. वैभव ११. मक़बरों से १२. अंधकार-पूर्ण १३. सच्चे १४. विज्ञापन १५. निर्धन

ये इमारातो-मक़ाबिर[1] , ये फ़सीलें, ये हिसार[2] ,
मुतलक़-उलहुक्म[3] शहनशाहों की अज़मत[4] के सतूं[5] ।
सीना-ए-दहर के[6] नासूर हैं, कुहना[7] नासूर,
जज़्ब[8] है इनमें तेरे और मेरे अजदाद[9] का खूं ।

मेरी महबूब ! उन्हें भी तो मुहब्बत होगी,
जिनकी सन्नाई ने[10] बख़्शी है[11] इसे शक्ले-जमील[12]
उनके प्यारों के मक़ाबिर रहे बेनामो-नमूद[13],
आज तक उन पे जलाई न किसी ने क़ंदील[14]।

ये चमनज़ार[15], ये जमना का किनारा, ये महल,
ये मुनक़्क़श[16] दरो-दीवार, ये महराब ये ताक़,
इक शहनशाह ने दौलत का सहारा लेकर,
हम ग़रीबों की मुहब्बत का उड़ाया है मज़ाक़ ।

मेरी महबूब कहीं और मिला कर मुझ से ।

१. इमारतें और मक़बरे २. क़िले ३. स्वेच्छाचारी ४. महानता ५. स्तम्भ ६. संसार के वक्षस्थल के ७. पुराने ८. रचा हुआ ९. पूर्वजों का १०. कारीगरी ने ११. प्रदान की है १२. सुन्दर रूप १३. जिनका कोई नाम व निशान तक नहीं १४. दीप १५. उद्यान १६. चित्रित

फ़नकार[1]

मैंने जो गीत तेरे प्यार की ख़ातिर लिक्खे,
आज उन गीतों को बाज़ार में ले आया हूँ।

आज दूकान पे नीलाम उठेगा उनका,
तूने जिन गीतों पे रक्खी थी मुहब्बत की असास[2],
आज चांदी के तराज़ू में तुलेगी हर चीज़,
मेरे अफ़कार[3], मेरी शायरी, मेरा अहसास॥

जो तेरी ज़ात से मनसूब थे[4] उन गीतों को,
मुफ़लिसी जिन्स[5] बनाने पे उतर आई है।
भूख, तेरे रुख़े-रंगीं के[6] फ़सानों के एवज़,
चन्द अशिया-ए-ज़रूरत की[7] तमन्नाई है॥

देख इस अर्सागहे-मेहनतो-सरमाया[8] में,
मेरे नग़मे भी मेरे पास नहीं रह सकते।
तेरे जलवे किसी ज़रदार[9] की मीरास सही,
तेरे ख़ाके[10] भी मेरे पास नहीं रह सकते॥

आज उन गीतों को बाज़ार में ले आया हूँ,
मैंने जो गीत तेरे प्यार की ख़ातिर लिक्खे।

---

१. कलाकार २. नींव ३. रचनाएँ ४. सम्बंधित थे ५. खाद्य-पदार्थ ६. रंगीन चेहरे के ७. ज़रूरत की चीज़ों की ८. मेहनत और पूँजी के क्षेत्र में ९. पूँजीपति १०. रेखाचित्र

कभी-कभी

कभी-कभी मेरे दिल में ख़याल आता है !

कि ज़िन्दगी तेरी ज़ुल्फ़ों की नर्म छाओं में,
गुज़रने पाती तो शादाब हो भी सकती थी।
ये तीरगी[1] जो मेरी ज़ीस्त का मुक़द्दर[2] है,
तेरी नज़र की शुआओं में[3] खो भी सकती थी ॥

अजब न था कि मैं बेगाना-ए-अलम[4] रहकर,
तेरे जमाल की[5] रअनाइयों में खो[6] रहता।
तेरा गुदाज़ बदन[7], तेरी नीम-बाज़[8] आंखें,
इन्हीं हसीन फ़सानों में महव[9] हो रहता ॥

पुकारतीं मुझे जब तल्ख़ियां ज़माने की,
तेरे लबों से[10] हलावत के[11] घूंट पी लेता।
हयात[12] चीख़ती फिरती बरहना-सर[13] और मैं,
घनेरी ज़ुल्फ़ों के साये में छुपके जी लेता ॥

---

१. अँधेरा २. जीवन का भाग्य ३. रश्मियों में ४. दुखों से अपरिचित ५. सौन्दर्य की ६. लावण्यताओं में ७. मृदुल, कोमल ८. अध-खुली ९. निमग्न १० होठों से ११. माधुर्य, रस के १२. जीवन १३. नंगे सिर

मगर ये हो न सका और अब ये आलम[1] है,
कि तू नहीं, तेरा ग़म, तेरी जुस्तजू भी नहीं।
गुज़र रही है कुछ इस तरह ज़िन्दगी जैसे,
इसे किसी के सहारे की आरज़ू भी नहीं॥

ज़माने भर के दुखों को लगा चुका हूं गले,
गुज़र रहा हूं कुछ अनजानी गुज़रगाहों से।
मुहीब[2] साये मेरी सिम्त बढ़ते आते हैं,
हयातो-मौत[3] के पुर-हौल ख़ारज़ारों से[4]॥

न कोई जादह[5], न मंज़िल न रोशनी का सुराग़,
भटक रही है ख़लाओं में[6] ज़िन्दगी मेरी।
इन्हीं ख़लाओं में रह जाऊंगा कभी खोकर,
मैं जानता हूं मेरी हम-नफ़स[7], मगर यूंही॥

कभी-कभी मेरे दिल में ख़याल आता है!

१. स्थिति २. भयानक ३. जीवन तथा मृत्यु ४. भयावह कंटीले जंगलों से ५. मार्ग ६. शून्य में ७. सहचर

फ़रार

अपने माज़ी के[1] तसव्वुर से[2] हिरासां[3] हूं मैं,
अपने गुज़रे हुए ऐयाम से[4] नफ़रत है मुझे।
अपनी बेकार तमन्नाओं पे शरमिन्दा हूं,
अपनी बेसूद[5] उम्मीदों पे नदामत है मुझे॥

मेरे माज़ी को अंधेरे में दबा रहने दो,
मेरा माज़ी मेरी ज़िल्लत के सिवा कुछ भी नहीं।
मेरी उम्मीदों का हासिल, मेरी काविश का[6] सिला,
एक बेनाम अज़ीयत के[7] सिवा कुछ भी नहीं॥

कितनी बेकार उम्मीदों का सहारा लेकर,
मैंने ईवान[8] सजाये थे किसी की ख़ातिर।
कितनी बेरब्त[9] तमन्नाओं के मुबहम खाके[10],
अपने ख़्वाबों में बसाये थे किसी की ख़ातिर॥

मुझसे अब मेरी मुहब्बत के फ़साने[11] न कहो,
मुझको कहने दो कि मैंने उन्हें चाहा ही नहीं।
और वो मस्त निगाहें जो मुझे भूल गईं,
मैंने उन मस्त निगाहों को सराहा ही नहीं॥

---

१. भूतकालीन २. कल्पना से ३. भयभीत ४. दिनों से ५. व्यर्थ ६. प्रयत्न का ७. कष्ट के ८. महल ९. असंगत १०. अस्पष्ट चित्र ११. कहानियाँ

मुझको कहने दो कि मैं आज भी जी सकता हूं,
इश्क़ नाकाम सही, ज़िन्दगी नाकाम नहीं।
उन्हें अपनाने की ख़्वाहिश, उन्हें पाने की तलब,
शौक़े-बेकार[1] सही, सइ-ए-ग़म-अंजाम[2] नहीं ॥

वही गेसू[3], वही नज़रें, वही आरिज़[4],वही जिस्म,
मैं जो चाहूं तो मुझे और भी मिल सकते हैं।
वो कंवल जिनको कभी उनके लिए खिलना था,
उनकी नज़रों से बहुत दूर भी खिल सकते हैं ॥

---

१. बेकार शौक़ २. दुखांत चेष्टा ३. केश ४. कपोल

कल और आज

(१)

कल भी बूंदें बरसी थीं
कल भी बादल छाये थे
और कवि ने सोचा था!

बादल ये आकाश के सपने इन जुल्फ़ों के साये हैं,
दोशे-हवा पर[1] मैखाने ही मैखाने घिर आये हैं।
रुत बदलेगी फूल खिलेंगे झोंके मध बरसायेंगे,
उजले-उजले खेतों में रंगीं आंचल लहरायेंगे।
चरवाहे बंसी की धुन से गीत फ़ज़ा में बोयेंगे,
आमों के झुंडों के नीचे परदेसी दिल खोलेंगे।
पींग बढ़ाती गोरी के माथे से कौंदे लपकेंगे,
जोहड़ के ठहरे पानी में तारे आंखें झपकेंगे।
उलझी-उलझी राहों में वो आंचल थामे आयेंगे,
धरती, फूल, आकाश, सितारे सपना सा बन जायेंगे।

कल भी बूंदें बरसी थीं,
कल भी बादल छाये थे,
और कवि ने सोचा था।

---

१. वायु के कंधे पर

(२)

आज भी बूंदें बरसेंगी
आज भी बादल छाये हैं
—और कवि इस सोच में है !

बस्ती पर बादल छाये हैं, पर ये बस्ती किसकी है ?
धरती पर अमृत बरसेगा, लेकिन धरती किसकी है ?
हल जोतेगी खेतों में अल्हड़ टोली दहक़ानों की[1] ,
धरती से फूटेगी मेहनत फ़ाक़ाकश इन्सानों की ।
फ़सलें काट के मेहनतकश, ग़ल्ले के ढेर लगायेंगे,
जागीरों के मालिक आकर सब 'पूंजी' ले जायेंगे ।
बूढ़े दहक़ानों के घर, बनिये की क़ुर्क़ी आयेगी,
और क़र्ज़ के सूद में कोई गोरी बेची जायेगी ।
आज भी जनता भूखो है और कल भी जनता तरसी थी,
आज भी रिमझिम बरखा होगी, कल भी बारिश बरसी थी ।

आज भी बादल छाये हैं,
आज भी बूंदें बरसेंगी,
और कवि इस सोच में है !

---

१. किसानों की

हिरास[1]

तेरे होंटों पे तबस्सुम[2] की वो हल्की-सी लकीर,
मेरे तख़ईल में[3] रह-रह के झलक उठती है।
यूं अचानक तेरे आरिज़ का[4] ख़याल आता है,
जैसे जुल्मत में[5] कोई शमअ भड़क उठती है॥

तेरे पैराहने-रंगीं की[6] जुनूंख़ेज़[7] महक,
ख़्वाब बन-बन के मेरे ज़ह्न में[8] लहराती है।
रात की सर्द ख़मोशी में हर इक झोंके से,
तेरे अनफ़ास[9] तेरे जिस्म की आंच आती है॥

मैं सुलगते हुए राज़ों को[10] अयां[11] तो कर दूं,
लेकिन इन राज़ों की तशहीर से[12] जी डरता है।
रात के ख़्वाब उजाले में बयां तो कर दूं,
इन हसीं ख़्वाबों की ताबीर से[13] जी डरता है॥

तेरे सांसों की थकन तेरी निगाहों का सुकूत[14],
दर-हक़ीक़त[15] कोई रंगीन शरारत ही न हो।
मैं जिसे प्यार का अंदाज़ समझ बैठा हूँ,
वो तबस्सुम, वो तकल्लुम[16] तेरी आदत ही न हो॥

---

१. भय २. मुस्कराहट ३. कल्पना में ४. कपोलों का ५. अंधेरे में ६. रंगीन लिबास की ७. उन्माद भरी ८. मस्तिष्क में ९. श्वासों १०. भेदों को ११. प्रकट १२. विज्ञापन से १३. स्वप्न-फल से १४. चुप्पी १५. वास्तव में १६. बातचीत (का ढंग)

सोचता हूँ कि तुझे मिलके मैं जिस सोच में हूँ,
पहले उस सोच का मक़सूम[1] समझ लूँ तो कहूँ।
मैं तेरे शहर में अनजान हूँ परदेसी हूं,
तेरे इल्ताफ़[2] का मफ़हूम[3] समझ लूँ तो कहूँ ॥

कहीं ऐसा न हो कि पांओं मेरे थर्रा जायें,
और तेरी मरमरीं[4] बाहों का सहारा न मिले।
अश्क बहते रहें ख़ामोश सियह[5] रातों में,
और तेरे रेशमी आंचल का किनारा न मिले ॥

---

१. भाग्य (परिणाम) २. कृपाओं का ३. तात्पर्य ४. संगमरमर की बनी (धवल, गोरी) ५. सियाह (काली)

इसी दोराहे पर !

अब न इन ऊंचे मकानों में क़दम रक्खूंगा,
मैंने इक बार ये पहले भी क़सम खाई थी।
अपनी नादार मुहब्बत की शिकस्तों के तुफ़ैल,
ज़िंदगी पहले भी शर्माई थी, झुंझलाई थी॥

और ये अहद[1] किया था कि ब-ई-हाले-तबाह[2],
अब कभी प्यार भरे गीत नहीं गाऊंगा।
किसी चिलमन ने पुकारा भी तो बढ़ जाऊंगा,
कोई दरवाज़ा खुला भी तो पलट आऊंगा॥

फिर तेरे कांपते होंटों की फ़ुसूंकार[3] हँसी,
जाल बुनने लगी, बुनती रही, बुनती ही रही।
मैं खिचा तुझ से, मगर तू मेरी राहों के लिए,
फूल चुनती रही, चुनती रही, चुनती ही रही॥

बर्फ़ बरसाई मेरे ज़हनो-तसव्वुर ने[4] मगर,
दिल में इक शोला-ए-बेनाम सा[5] लहरा ही गया।
तेरी चुपचाप निगाहों को सुलगते पाकर,
मेरी बेज़ार तबीयत को भी प्यार आ ही गया॥

१. प्रतिज्ञा २. यों तबाह-हाल होने पर ३. जादू भरी
४. मस्तिष्क तथा कल्पना ने ५. बेनाम सा शोला

अपनी बदली हुई नज़रों के तक़ाज़े न छुपा,
मैं इस अंदाज़ का मफ़हूम[1] समझ सकता हूं।
तेरे ज़रकार[2] दरीचों की बुलंदी की क़सम,
अपने अक़दाम का मक़सूम[3] समझ सकता हूं॥

'अब न इन ऊंचे मकानों में क़दम रक्खूंगा',
मैंने इक बार ये पहले भी क़सम खाई थी।
इसी सरमाया-ओ-इफ़लास के दोराहे पर,
ज़िंदगी पहले भी शर्माई थी, झुंझलाई थी॥

१. अर्थ २. स्वर्णिम ३. भाग्य

एक तस्वीरे-रंग

मैंने जिस वक्त तुझे पहले-पहल देखा था,
तू जवानी का कोई ख़्वाब नज़र आई थी।
हुस्न का नग़मा-ए-जावेद[1] हुई थी मालूम
इश्क़ का जज़्बा-ए-बेताब[2] नज़र आई थी॥

ऐ तरबज़ारे-जवानी[3] की परेशां तितली,
तू भी इक बू-ए-गिरफ़्तार[4] है, मालूम न था।
तेरे जलवों में बहारें नज़र आई थीं मुझे,
तू सितम-खुर्दहे-अदवार[5] है, मालूम न था॥

तेरे नाज़ुक से परों पर ये ज़रो-सीम का[6] बोझ,
तेरी परवाज़[7] को आज़ाद न होने देगा।
तूने राहत की तमन्ना में जो ग़म पाला है,
वो तेरी रूह को आबाद न होने देगा॥

तूने सरमाये की छाओं में पनपने के लिए,
अपने दिल, अपनी मुहब्बत का लहू बेचा है।
दिन की तज़ईने-फ़सुर्दा[8] का असासा[9] लेकर,
रात की शोख़ मुसर्रत का लहू बेचा है॥

---

१. अनन्त संगीत २. विकल भावना ३. यौवन रूपी उद्यान ४. बन्दी सुगन्ध ५. दुर्भाग्य के हाथों पीड़ित ६. सोने-चांदी का ७. उड़ान ८ रूखी-फीकी सज्जा ९. निधि

इससे क्या फ़ायदा रंगीन लबादों के[1] तले,
रूह जलती रहे, गलती रहे, पज़मुर्दा[2] रहे।
होंट हँसते हों दिखावे के तबस्सुम[3] के लिए,
दिल ग़मे-ज़ीस्त[4] से बोझल रहे आज़ुर्दा[5] रहे।।

दिल की तस्कीं[6] भी है आसाइशे-हस्ती[7] की दलील,
ज़िन्दगी सिर्फ़ ज़रो-सीम का पैमाना नहीं।
ज़ीस्त एहसास[8] भी है, शौक़ भी है, दर्द भी है,
सिर्फ़ अनफ़ास की[9] तरतीब का अफ़साना[10] नहीं।।

उम्र भर रेंगते रहने से कहीं बेहतर है,
एक लम्हा जो तेरी रूह में वुसअ़त[11] भर दे।
एक लम्हा जो तेरे गीत को शोख़ी दे दे,
एक लम्हा जो तेरी लै में मुसर्रत भर दे।।

---

१. वस्त्रों के २. मुर्झाई हुई ३. मुस्कान ४. जीवन के ग़म ५. चिन्तित ६. तृप्ति ७. जीवन के सुख ८. अनुभूति ९. श्वासों की १०. कहानी ११. विशालता

खुदकुशी से पहले

उफ़ ये बेदर्द सियाही ये हवा के नोहे[१],
किसको मालूम है इस शब की[२] सहर[३] हो कि न हो।
इक नज़र तेरे दरीचे की तरफ़ देख तो लूँ,
डूबती आँखों में फिर ताबे-नज़र[४] हो कि न हो॥

अभी रोशन हैं तेरे गर्म शबिस्तां के[५] दिये,
नीलगूं पर्दों से छनती हैं शुआयें अब तक।
अजनबी बाहों के हल्क़े में लचकती होंगी,
तेरे महके हुए बालों की रिदायें[६] अब तक॥

सर्द होती हुई बत्ती के धुएं के हमराह,
हाथ फैलाए बढ़े आते हैं बोझल साये।
कौन पोंछे मेरी आंखों के सुलगते आँसू?
कौन उलझे हुए बालों की गिरह सुलझाये?

आह ये ग़ारे-हलाकत[७], ये दिये का महबस[८],
उम्र अपनी इन्हीं तारीक[९] मकानों में कटी।
ज़िन्दगी फ़ितरते-बेहिस की[१०] पुरानी तक़सीर[११],
इक हक़ीक़त थी मगर चंद फ़सानों में कटी॥

---

१. विलाप २. रात की ३. सुबह ४. देखने की शक्ति ५. शयनागार के ६. चादरें, लटें ७. विनाश की कन्दरा ८. कारावास ९. अंधेरे १०. निष्ठुर प्रकृति की ११. अभियोग

कितनी आसाइशें[1] हँसती रहीं एवानों में,
कितने दर मेरी जवानी पे सदा बंद रहे।
कितने हाथों ने बुना अतलसो-कमख़्वाब मगर,
मेरे मलबूस की[2] तक़दीर में पेवंद रहे॥

ज़ुल्म सहते हुए इन्सानों के इस मक़तल[3] में,
कोई फ़र्दा के[4] तसव्वुर से कहां तक बहले?
उम्र भर रेंगते रहने की सज़ा है जीना,
एक दो दिन की अज़ीयत हो तो कोई सह ले।

वही ज़ुलमत[5] है फ़ज़ाओं पे[6] अभी तक तारी,
जाने कब ख़त्म हो इन्सां के लहू की तक़तीर[7]?
जाने कब निखरे सियहपोश फ़ज़ा[8] का जोबन?
जाने कब जागे सितम-ख़ुर्दा बशर की[9] तक़दीर?

अभी रोशन हैं तेरे गर्म शबिस्तां के दिये,
आज मैं मौत के ग़ारों में उतर जाऊँगा।
और दम तोड़ती बत्ती के धुएं के हमराह,
सरहदे-मर्ग-मुसलसल से[10] गुज़र जाऊँगा॥

---

१. सुख-समृद्धियाँ २. लिबास की ३. वध-स्थल ४. कल के ५. अंधेरा ६. वातावरण पर ७. बूंद-बूंद टपकना ८. काले वातावरण का ९. अत्याचार-पीड़ित मनुष्य १०. निरंतर मृत्यु की सीमा से

मेरे गीत तुम्हारे हैं

अब तक मेरे गीतों में उम्मीद भी थी पसपाई भी,
मौत के क़दमों की आहट भी, जीवन की अंगड़ाई भी।
मुस्तक़बिल की किरणें भी थीं, हाल की बोझल ज़ुलमत[1] भी
तूफ़ानों का शोर भी था और ख़्वाबों की शहनाई भी॥

आज से मैं अपने गीतों में आतिशपारे[2] भर दूँगा,
मद्धम लचकीली तानों में जीवट-धारे भर दूँगा।
जीवन के अन्धियारे पथ पर मशअल लेकर निकलूंगा,
धरती के फैले आंचल में सुर्ख़ सितारे भर दूँगा॥

आज से ऐ मज़दूर किसानो! मेरे राग तुम्हारे हैं,
फ़ाक़ाकश इन्सानो! मेरे जोग बिहाग तुम्हारे हैं।
जब तक तुम भूखे नंगे हो, ये शोले ख़ामोश न होंगे,
जब तक बे-आराम हो तुम, ये नग़मे राहत-कोश[3] न होंगे॥

मुझको इसका रंज नहीं है लोग मुझे फ़नकार न मानें,
फ़िक्रो-सुख़न के ताजिर मेरे शेरों को अशआर न मानें।
मेरा फ़न, मेरी उम्मीदें, आज से तुमको अर्पन हैं,
आज से मेरे गीत तुम्हारे दुख और सुख का दर्पन हैं॥

---

१. अंधेरा २. आग के टुकड़े ३. आनन्ददायक

तुम से क़ुव्वत[1] लेकर अब मैं तुमको राह दिखाऊँगा,
तुम परचम लहराना साथी, मैं बरबत पर गाऊँगा।
आज से मेरे फ़न का मक़सद ज़ंजीरें पिघलाना है,
आज से मैं शबनम के बदले अंगारे बरसाऊँगा॥

१. शक्ति

नूरजहां के मज़ार पर

पहलुए-शाह में[1] ये दुख़्तरे जमहूर को[2] क़ब्र,
कितने गुमगश्ता फ़सानों का[3] पता देती है।
कितने ख़ूंरेज़ हक़ायक़ से[4] उठाती है नक़ाब,
कितनी कुचली हुई जानों का पता देती है॥

कैसे मग़रूर शहनशाहों की तसकीं के लिए,
सालहासाल हसीनाओं के बाज़ार लगे।
कैसी बहकी हुई नज़रों के तअय्युश[5] के लिए,
सुर्ख़ महलों में जवां जिस्मों के अंबार लगे॥

कैसे हर शाख़ से मुंह बंद महकती कलियां,
नोच ली जाती थीं तज़ईने-हरम[6] की ख़ातिर।
और मुर्झा के भी आज़ाद न हो सकती थीं,
ज़िल्ले-सुबहान को[7] उलफ़त के भरम की ख़ातिर॥

कैसे इक फ़र्द के[8] होंटों की ज़रा जी जुंबिश,
सर्द कर सकती थी बेलौस[9] वफ़ाओं के चिराग़।
लूट सकती थी दमकते हुए हाथों का सुहाग,
तोड़ सकती थी मये-इश्क़ से[10] लबरेज़ अयाग़[11]॥

१. बादशाह की बगल में २. जनता की बेटी की ३. भूली-बिसरी कहानियों का ४. रक्तयुक्त घटनाओं से ५. विलासप्रियता ६. हरम की शोभा ७. बादशाह ८. व्यक्ति के ९. निष्काम १०. प्रेम रूपी मदिरा से ११. भरे हुए प्याले

सहमी-सहमी सी फ़ज़ाओं में ये वीरां मरक़द[1] ,
इतना ख़ामोश है, फ़रियादेकुनां[2] हो जैसे ।
सर्द शाख़ों में हवा चीख़ रही है ऐसे,
रूहे-तक़दीसो-वफ़ा[3] मर्सियाख़्वां हो[4] जैसे ।।

तू मेरी जान ! मुझे हैरतो-हसरत से न देख,
हम में कोई भी जहांनूरो-जहांगीर नहीं ।
तू मुझे छोड़ के ठुकरा के भी जा सकती है,
तेरे हाथों में मेरे हाथ हैं, ज़ंजीर नहीं ।।

१. क़ब्र २. न्याय की दुहाई दे रहा हो ३. प्रेम तथा पवित्रता की आत्मा ४. विलाप कर रही हो

जागीर

फिर उसी वादी-ए-शादाब में लौट आया हूं,
जिसमें पिनहां मेरे ख़्वाबों की तरबगाहें[1] हैं।
मेरे अहबाब के सामाने-तअय्युश[2] के लिए,
शोख़ सीने हैं, जवां जिस्म, हसीं बांहें हैं॥

सब्ज़ खेतों में ये दुबकी हुई दोशीज़ायें,
इनकी शरयानों में[3] किस-किस का लहू जारी है?
किसमें जुर्रत है कि इस राज़ की तशहीर[4] करे?
सब के लब पर मेरी हैबत का फ़ुसूं[5] तारी है॥

हाए वो गर्मो-दिलावेज़[6] उबलते सीने,
जिनसे हम सतवते-आबा का[7] सिला[8] लेते हैं।
जाने इन मरमरीं जिस्मों को ये मरियल दहक़ां,
कैसे इन तीरह[9] घरौंदों में जनम देते हैं?

ये लहकते हुए पौदे, ये दमकते हुए खेत,
पहले अजदाद की[10] जागीर थी अब मेरे हैं।
ये चिरागाह, ये रेवड़, ये मवेशी, ये किसान,
सब-के-सब मेरे हैं, सब मेरे हैं, सब मेरे हैं॥

---

१. आनंद के स्थान २. भोग-विलास की सामग्री ३. रगों में ४. विज्ञापन ५. आतंक का जादू ६. गर्म और मनोरम ७. बुजुर्गों प्रताप ८. बदला ९. अंधेरे १०. पूर्वजों की

इनकी मेहनत भी मेरी, हासिले-मेहनत[1] भी मेरा,
इनके बाज़ू भी मेरे, कुव्वते-बाज़ू भी मेरी।
मैं ख़ुदावंद[2] हूं इस वुसअ़ते-बेपायां[3] का,
मौजे-आरिज़[4] भी मेरी, नकहते-गेसू[5] भी मेरी॥

मैं उन अजदाद का बेटा हूं जिन्होंने पैहम[6],
अजनबी क़ौम के साये की हिमायत की है।
ग़दर की साअ़ते-नापाक से[7] लेकर अब तक,
हर कड़े वक़्त में सरकार की ख़िदमत की है॥

ख़ाक पर रेंगने वाले ये फ़सुर्दह[8] ढांचे,
इनकी नज़रें कभी तलवार बनी हैं न बनें।
इनकी ग़ैरत पे हर-इक हाथ झपट सकता है,
इनके अबरू की[9] कमानें न तनी हैं न तनें॥

हाए ये शाम, ये झरने, ये शफ़क़ की लाली,
मैं इन आसूदह फ़ज़ाओं में[10] ज़रा झूम न लूं।
वो दबे पांव उधर कौन चली जाती है?
बढ़ के उस शोख़ के तरशे हुए लब चूम न लूं॥

---

१. परिश्रम का फल २. स्वामी ३. असीम विशालता ४. कपोलों (में पैदा होने वाली) लहरें ५. केशों की सुगंध ६. हमेशा ७. अशुभ घड़ी से ८. शिथिल ९. भकुटि की १०. आनन्द-वर्धक वातावरण में

मादाम

आप बेवजह परेशान-सी क्यों हैं मादाम[१] !
लोग कहते हैं तो फिर ठीक ही कहते होंगे।
मेरे अहबाब ने[२] तहज़ीब न सीखी होगी,
मेरे माहौल में[३] इन्सान न रहते होंगे॥

नूरे-सरमाया से[४] है रूए-तमद्दुन की[५] जिला[६],
हम जहां हैं वहां तहज़ीब नहीं पल सकती।
मुफ़लिसी हिसे-लताफ़त को[७] मिटा देती है,
भूख आदाब के[८] सांचे में नहीं ढल सकती॥

लोग कहते हैं तो लोगों पे तअ़ज्जुब कैसा ?
सच तो कहते हैं कि नादारों की[९] इज़्ज़त कैसी ?
लोग कहते हैं—मगर आप अभी तक चुप हैं,
आप भी कहिये ग़रीबों में शराफ़त कैसी ?

नेक मादाम ! बहुत जल्द वो दौर आयेगा,
जब हमें ज़ीस्त के अदवार[१०] परखने होंगे।
अपनी ज़िल्लत की क़सम, आपकी अ़ज़मत की क़सम
हमको ताज़ीम के[१२] मेअ़ार[१३] परखने होंगे॥

१. 'मैडम' का उर्दू रूपान्तर २. मित्रों ने ३. वातावरण में ४. धन के प्रकाश से ५. सभ्यता के चेहरे की ६. चमक ७. कोमलता के भाव को ८. शिष्टता के ९. निर्धनों की १०. जीवन के युग ११. महानता की १२. आदर-सम्मान के १३. आदर्श या मूल्य

हमने हर दौर में[1] तज़लील[2] सही है लेकिन,
हमने हर दौर के चेहरे को ज़िया[3] बख़्शी है।
हमने हर दौर में मेहनत के सितम झेले हैं,
हमने हर दौर के हाथों को हिना[4] बख़्शी है॥

लेकिन इन तल्ख़ मबाहिस से[5] भला क्या हासिल?
लोग कहते हैं तो फिर ठीक ही कहते होंगे।
मेरे अहबाब ने तहज़ीब न सीखी होगी,
मैं जहां रहता हूं इन्सान न रहते होंगे॥

---

१. काल में २. अपमान ३. चमक-दमक ४. महंदी ५. विवाद से

तेरी आवाज़

रात सुनसान थी, बोझल थीं फ़ज़ा की[1] सांसें,
रूह पे छाए थे बेनाम ग़मों के साये।
दिल को ये ज़िद थी कि तू आए तसल्ली देने,
मेरी कोशिश थी कि कमबख्त को नींद आ जाये॥

देर तक आंखों में चुभती रही तारों की चमक,
देर तक ज़हन सुलगता[2] रहा तनहाई में।
अपने ठुकराये हुए दोस्त की पुरसिश[3] के लिए,
तू न आई मगर इस रात की पहनाई[4] में॥

यूँ अचानक तेरी आवाज़ कहीं से आई,
जैसे परबत का जिगर चीर के झरना फूटे।
या ज़मीनों की मुहब्बत में तड़प कर नागाह,
आसमानों से कोई शोख़ सितारा टूटे॥

शहद सा घुल गया तल्ख़ाबा-ए-तनहाई में[5],
रंग सा फैल गया दिल के सियाह-ख़ाने में।
देर तक यूं तेरी मस्ताना सदायें गूंजीं,
जिस तरह फूल चटकने लगें वीराने में॥

१. वातावरण की २. मस्तिष्क ३. हाल-चाल पूछना ४. विशालता
५. एकांत के कड़वेपन में

तू बहुत दूर किसी अंजुमने-नाज़[1] में थी,
फिर भी महसूस किया मैंने कि तू आई है।
और नग़मों में छुपाकर मेरे खोये हुए ख़्वाब,
मेरी रूठी हुई नींदों को मना लाई है॥

रात की सतह पे उभरे तेरे चेहरे के नक़ूश[2],
वही चुपचाप सी आंखें, वही सादा सी नज़र।
वही ढलका हुआ आंचल, वही रफ़्तार का ख़म[3],
वही रह रह के लचकता हुआ नाज़ुक पैकर[4]॥

तू मेरे पास न थी फिर भी सहर[5] होने तक,
तेरा हर सांस मेरे जिस्म को छूकर गुज़रा।
क़तरा-क़तरा तेरे दीदार[6] की शबनम टपकी,
लम्हा-लम्हा तेरी ख़ुशबू से मुअत्तर[7] गुज़रा॥

अब यही है तुझे मंज़ूर तो ऐ जाने-बहार[8],
मैं तेरी राह न देखूंगा सियाह रातों में।
ढूंढ लेंगी मेरी तरसी हुई नज़रें तुझको,
नग़मा-ओ-शेर की उभरी हुई बरसातों में॥

अब तेरा प्यार सतायेगा तो मेरी हस्ती,
तेरी मस्ती भरी आवाज़ में ढल जायेगी।
और ये रूह जो तेरे लिए बेचैन सी है,
गीत बन-बन के तेरे होंटों पे मचल जायेगी॥

१. नाज़ों भरी महफ़िल २. नैन-नक्श ३. चाल की लचक
४. बदन ५. सुबह ६. दर्शन ७. सुगंधित ८. बहारों की जान

तेरे नग़मात[1], तेरे हुस्न की ठंडक लेकर,
मेरे तपते हुए माहौल[2] में आजायेंगे।
चन्द घड़ियों के लिए हो कि हमेशा के लिए,
मेरी जागी हुई रातों को सुला जायेंगे॥

१. गीत २. वातावरण

परछाइयां

जवान रात के सीने पे दूधिया आंचल,
मचल रहा है किसी ख़्वाबे-मरमरीं की[१] तरह।
हसीन फूल, हसीं पत्तियां, हसीं शाखें,
लचक रही हैं किसी जिस्मे-नाज़नीं की[२] तरह।
फ़ज़ा में घुल से गये हैं उफ़क़ के[३] नर्म ख़ुतूत[४],
ज़मीं हसीन है, ख़्वाबों की सरज़मीं की तरह।

तसव्वुरात की[५] परछाइयां उभरती हैं,
कभी गुमान[६] की सूरत कभी यक़ीं की तरह।
वो पेड़ जिन के तले हम पनाह लेते थे,
खड़े हैं आज भी साकित[७] किसी अमीं की[८] तरह।

इन्हीं के साये में फिर आज दो धड़कते दिल,
ख़मोश होंटों से कुछ कहने-सुनने आये हैं।
न जाने कितनी कशाकश से[९], कितनी काविश से[१०],
ये सोते जागते लम्हे चुराके लाये हैं।

१. मरमर-ऐसे (सुन्दर) सपने की २. सुन्दरी के बदन की ३. क्षितिज के ४. रेखायें, नैन-नक्श ५. कल्पना की ६. भ्रम ७. चुपचाप ८. साक्षी ९,१०. यत्न-प्रयत्न से

यही फ़ज़ा थी, यही रुत, यही ज़माना था,
यहीं से हमने मुहब्बत की इब्तिदा की[1] थी।
धड़कते दिल से, लरज़ती हुई निगाहों से,
हुज़ूरे-ग़ैब में[2] नन्ही सी इल्तिजा की थी।

कि आरज़ू के कंवल खिल के फूल हो जायें।
दिलो-नज़र की दुआयें क़बूल हो जायें॥

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं!

तुम आ रही हो ज़माने की आंख से बचकर,
नज़र झुकाये हुए और बदन चुराये हुए।
ख़ुद अपने क़दमों की आहट से झेंपती, डरती,
ख़ुद अपने साये की जुंबिश से ख़ौफ़ खाए हुए।

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं!

रवां है छोटी सी कश्ती हवाओं के रुख़ पर,
नदी के साज़ पे मल्लाह गीत गाता है।
तुम्हारा जिस्म हर इक लहर के झकोले से,
मेरी खुली हुई बांहों में झूल जाता है।

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं!

१. प्रारम्भ २. भगवान की सेवा में

मैं फूल टांक रहा हूं तुम्हारे जूड़े में,
तुम्हारी आंख मुसर्रत से झुकती जाती है।
न जाने आज मैं क्या बात कहने वाला हूं,
ज़बान खुश्क है आवाज़ रुकती जाती है।

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं!

मेरे गले में तुम्हारी गुदाज़[1] बांहें हैं,
तुम्हारे होंटों पे मेरे लबों के साये हैं।
मुझे यक़ीं है कि हम अब कभी न बिछड़ेंगे,
तुम्हें गुमान कि हम मिलके भी पराये हैं।

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं!

मेरे पलंग पे बिखरी हुई किताबों को,
अदाए अज्ज़ो-करम से[2] उठा रही हो तुम।
सुहाग-रात जो ढोलक पे गाये जाते हैं,
दबे सुरों में वही गीत गा रही हो तुम।

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं!

१. कोमल २. विनय और कृपा की अदा से

वो लम्हे कितने दिलकश थे वो घड़ियां कितनी प्यारी थीं,
वो सेहरे कितने नाजुक थे वो लड़ियां कितनी प्यारी थीं।
बस्ती की हर-इक शादाब गली[1] ख़्वाबोंका जज़ीरा[2] थी गोया,
हर मौजे-नफ़स[3], हर मौजे-सबा[4],नग़मों का ज़ख़ीरा[5] थी गोया।

नागाह[6] लहकते खेतों से टापों की सदायें आने लगीं।
बारूद की बोझल बू लेकर पच्छम से हवायें आने लगीं॥
तामीर के[7] रौशन चेहरे पर तख़रीब का[8] बादल फैल गया।
हर गांव में वहशत[9] नाच उठी, हर शहर में जंगल फैल गया॥
मग़रिब के मोहज़्ज़ब मुल्कों से कुछ ख़ाकी-वर्दी-पोश आये।
इठलाते हुए मग़रूर आये, लहराते हुए मदहोश आये॥
ख़ामोश ज़मीं के सीने में ख़ेमों की तनाबें गड़ने लगीं।
मक्खन सी मुलायम राहों पर बूटों की ख़राशें पड़ने लगीं॥
फ़ौजों के भयानक बैंड तले चख़्रों की सदायें डूब गईं।
जीपों की सुलगती धूल तले फूलों की क़बायें[10] डूब गईं॥

इन्सान की क़ीमत गिरने लगी, अजनास के[11] भाओ चढ़ने लगे।
चौपाल की रौनक़ घटने लगी,भरती के दफ़ातर[12] बढ़ने लगे॥
बस्ती के सजीले शोख़ जवां, बन-बन के सिपाही जाने लगे।
जिस राह से कम ही लौट सके, उस राह पे राही जाने लगे॥

---

१. प्रसन्न गली २. स्वप्नों का टापू ३. श्वास ४. हवा की लहर ५. भण्डार ६. अकस्मात ७. निर्माण ८. ध्वंस का ९. बर्बरता १०. आवरण ११ अनाजों के १२ दफ़्तर

इन जाने वाले दस्तों में ग़ैरत भी गई बरनाई[1] भी।
माओं के जवां बेटे भी गये, बहनों के चहेते भाई भी॥

बस्ती पे उदासी छाने लगी, मेलों की बहारें ख़त्म हुईं।
आमों की लचकती शाख़ों से झूलों की क़तारें ख़त्म हुईं॥

धूल उड़ने लगी बाज़ारों में, भूख उगने लगी खलियानों में।
हर चीज़ दुकानों से उठकर, रूपोश हुई तहख़ानों में॥

बदहाल घरों की बदहाली, बढ़ते-बढ़ते जंजाल बनी।
महंगाई बढ़कर काल बनी, सारी बस्ती कंगाल बनी॥

चरवाहियां रस्ता भूल गईं, पनहारियां पनघट छोड़ गईं।
कितनी ही कंवारी अबलायें, मां-बाप की चौखट छोड़ गईं॥

इफ़लास-ज़हद दहक़ानों के[2] हल-बैल बिके, खलियान बिके।
जीने की तमन्ना के हाथों, जीने ही के सब सामान बिके॥

कुछ भी न रहा जब बिकने को जिस्मों की तिजारत होने लगी।
ख़लवत में[3] भी जो ममनूअ़[4] थी वो जलवत में[5] जसारत[6] होने लगी॥

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं!

तुम आ रही हो सरे-आम बाल बिखराये,
हज़ार गोना मलामत का बार उठाये हुए।

---

१. जवानी २. निर्धनता के मारे किसानों के ३. एकांत में
४. निषिद्ध ५. खुले-आम ६ धृष्टता

हवस-परस्त[1] निगाहों की चीरह-दस्ती से[2],
बदन की झेंपती उरियानियां[3] छुपाए हुए ।।

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं !

मैं शहर में जाकर हर इक दर[4] झाँक आया हूँ,
किसी जगह मेरी मेहनत का मोल मिल न सका ।
सितमगरों के सियासी क़मारख़ाने में[5],
अलम-नसीब फ़रासत[6] का मोल मिल न सका ।।

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं !

तुम्हारे घर में क़यामत का शोर बर्पा है,
महाज़े-जंग से[7] हरकारा तार लाया है ।
कि जिसका ज़िक्र तुम्हें ज़िन्दगी से प्यारा था,
वो भाई 'नर्ग़ा-ए-दुश्मन' में[8] काम आया है ।।

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं !

हर एक गाम पे[9] बदनामियों का जमघट है,
हर एक मोड़ पे रुसवाइयों के मेले हैं ।
न दोस्ती,न तकल्लुफ़, न दिलबरी, न ख़ुलूस[10],
किसी का कोई नहीं आज सब अकेले हैं ।।

---

१. लोलुप २. उद्दण्डता से ३. नग्नताएँ ४. दरवाज़ा ५. जुआख़ाने में ६. शोक-ग्रस्त विवेक ७. युद्ध-क्षेत्र से ८. शत्रु के घेरे में ९. क़दम पर १०. शुद्ध-हृदयता

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं !

वो रहगुज़र जो मेरे दिल की तरह सूनी है,
न जाने तुमको कहां ले के जाने वाली है।
तुम्हें ख़रीद रहे हैं ज़मीर के क़ातिल,
उफ़क़ पे ख़ूने-तमन्नाए-दिल की[1] लाली है॥

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं !

सूरज के लहू में लिथड़ी हुई वो शाम है अब तक याद मुझे।
चाहत के सुनहरे ख़्वाबों का अंजाम है अब तक याद मुझे॥

उस शाम मुझे मालूम हुआ, खेतों की तरह इस दुनिया में,
सहमी हुई दोशीज़ाओं की[2] मुस्कान भी बेची जाती है।
उस शाम मुझे मालूम हुआ, इस कारगहे-ज़रदारी में[3],
दो भोली-भाली रूहों की पहचान भी बेची जाती है॥

उस शाम मुझे मालूम हुआ, जब बाप की खेती छिन जाये,
ममता के सुनहरे ख़्वाबों की अनमोल निशानी बिकती है।
उस शाम मुझे मालूम हुआ, जब भाई जंग में काम आयें,
सरमाये के क़हबाख़ाने में[4] बहनों की जवानी बिकती है॥

सूरज के लहू में लिथड़ी हुई वो शाम है अब तक याद मुझे।
चाहत के सुनहरे ख़्वाबों का अंजाम है अब तक याद मुझे॥

---

१. मनोकामना के रक्त की २. तरुण कुमारियों की
३. पूंजीवाद के कारखाने में ४. वेश्यालय में

तुम आज हज़ारों मील यहां से दूर कहीं तनहाई में,
या बज़्मे-तरब-आराई में[1],
मेरे सपने बुनती होगी बैठी आग़ोश पराई में।

और मैं सीने में ग़म लेकर दिन रात मशक़्क़त[2] करता हूं,
जीने की ख़ातिर मरता हूं,
अपने फ़न को रुसवा करके अग़ियार का[3] दामन भरता हूं।

मजबूर हूं मैं, मजबूर हो तुम, मजबूर ये दुनिया सारी है,
तन का दुख मन पर भारी है,
इस दौर में[4] जीने की क़ीमत या दारो-रसन[5] या ख़्वारी है।

मैं दारो-रसन तक जा न सका, तुम जहद की[6] हद तक आ न सकीं,
चाहा तो मगर अपना न सकीं,
हम तुम दो ऐसी रूहें हैं जो मंज़िले-तस्कीं[7] पा न सकीं।

जीने को जिये जाते हैं मगर, सांसों में चितायें जलती हैं,
ख़ामोश वफ़ायें जलती हैं,
संगीन हक़ायक़-ज़ारों में[8], ख़्वाबों की रिदायें[9] जलती हैं।

और आज इन पेड़ों के नीचे फिर दो साये लहराये हैं,
फिर दो दिल मिलने आये हैं,
फिर मौत की आंधी उट्ठी है, फिर जंग के बादल छाये हैं।

---

१. आनन्दोत्पादक महफ़िल में २. परिश्रम ३. ग़ैर का ४. काल में ५. सूली ६. संग्राम ७. शान्ति की मंज़िल ८. कठोर वास्तविकताओं की भूमि में (संसार में) ९. चादरें

मैं सोच रहा हूं इनका भी अपनी ही तरह अंजाम न हो,
इनका भी जुनूं[1] बदनाम न हो,
इनके भी मुक़द्दर में लिक्खी इक ख़ून में लिथड़ी शाम न हो।

सूरज के लहू में लिथड़ी हुई वो शाम है अब तक याद मुझे।
चाहत के सुनहरे ख़्वाबों का अंजाम है अब तक याद मुझे॥

हमारा प्यार हवादिस की[2] ताब ला न सका,
मगर इन्हें तो मुरादों की रात मिल जाये।
हमें तो कशमकशे-मर्गे-बेअमां[3] ही मिली,
इन्हें तो झूमती गाती हयात मिल जाये॥

बहुत दिनों से है ये मश्ग़ला[4] सियासत का,
कि जब जवान हों बच्चे तो क़त्ल हो जायें।
बहुत दिनों से है ये ख़ब्त[5] हुक्मरानों का,
कि दूर-दूर के मुल्कों में क़हत बो जायें॥

बहुत दिनों से जवानी के ख़्वाब वीरां हैं,
बहुत दिनों से मुहब्बत पनाह ढूंढती है।
बहुत दिनों से सितम-दीदह शाहराहों में[6],
निगारे-ज़ीस्त[7] की इस्मत पनाह ढूंढती है॥

---

१. उन्माद, प्रेम २. दुर्घटनाओं की ३. बेपनाह मृत्यु की खींचातानी ४. मनोविनोद ५. उन्माद ६. अत्याचार-पीड़ित राजपथों में ७. जीवन-रूपी प्रेयसी

चलो कि आज सभी पायमाल[1] रूहों से,
कहें कि अपने हर-इक ज़ख़्म को ज़ुबां कर लें।
हमारा राज़, हमारा नहीं सभी का है,
चलो कि सारे ज़माने को राज़दां कर लें।

चलो कि चल के सियासी मुक़ामिरों से[2] कहें,
कि हम को जंगो-जदल के चलन से नफ़रत है।
जिसे लहू के सिवा कोई रंग रास न आये,
हमें हयात के[3] उस पैरहन से[4] नफ़रत है॥

कहो कि अब कोई क़ातिल अगर इधर आया,
तो हर क़दम पे ज़मीं तंग होती जायेगी।
हर एक मौजे-हवा[5] रुख़ बदल के झपटेगी,
हर एक शाख़ रगे-संग[6] होती जायेगी॥

उठो कि आज हर इक जंगजू से ये कह दें,
कि हम को काम की ख़ातिर कलों की हाजत[7] है।
हमें किसी की ज़मीं छीनने का शौक़ नहीं,
हमें तो अपनी ज़मीं पर हलों की हाजत है॥

कहो कि अब कोई ताजिर इधर का रुख न करे,
अब इस जा[8] कोई कंवारी न बेची जायेगी।
ये खेत जाग पड़े, उठ खड़ी हुई फसलें,
अब इस जगह कोई क्यारी न बेची जायेगी॥

---

१. कुचली हुई २. जुएबाज़ों से ३. जीवन के ४. लिबास से
५. हवा की लहर ६. पत्थर की रग ७. आवश्यकता ८. जगह

ये सरज़मीन है गौतम की और नानक की,
इस अर्ज़े-पाक पे[1] वहशी न चल सकेंगे कभी।
हमारा खून अमानत है नस्ले-नौ के[2] लिए,
हमारे खून पे लश्कर न पल सकेंगे कभी॥

कहो कि आज भी हम सब अगर खमोश रहे,
तो इस दमकते हुए खाकदां की[3] खैर नहीं।
जुनूं की[4] ढाली हुई एटमी बलाओं से,
ज़मीं की खैर नहीं आसमां की खैर नहीं॥

गुज़श्ता[5] जंग में घर ही जले मगर इस बार,
अजब नहीं कि ये तनहाइयां भी जल जायें।
गुज़श्ता जंग में पैकर[6] जले मगर इस बार,
अजब नहीं कि ये परछाइयाँ भी जल जायें॥

तसव्वुरात की परछाइयाँ उभरती हैं !

---

१. पवित्र भूमि पर २. नई पीढ़ी के ३. संसार की ४. उन्माद की ५. पिछली ६. शरीर

मेरे गीत

मेरे सरकश[1] तराने सुनके दुनिया ये समझती है,
कि शायद मेरे दिल को इश्क़ के नग़मों से नफ़रत है।
मुझे हंगामा-ए-जंगो-जदल[2] में कैफ़[3] मिलता है,
मेरी फ़ितरत[4] को खूंरेज़ी[5] के अफ़सानों से रग़बत[6] है।
मेरी दुनिया में कुछ वक़अत[7] नहीं है रक़्स-ो-नग़मे की[8],
मेरा महबूब-नग़मा[9] शोरे-आहंगे-बग़ावत है॥

मगर ऐ काश ! देखें वो मेरी पुरसोज़[10] रातों को,
मैं जब तारों पे नज़रें गाड़कर आँसू बहाता हूं।
तसव्वुर बनके[11] भोली वारदातें[12] याद आती हैं,
तो सोज़ो-दर्द की शिद्दत[13] से पहरों तिलमिलाता हूं।
कोई ख्वाबों में ख़्वाबीदा[14] उमंगों को जगाती है,
तो अपनी ज़िन्दगी को मौत के पहलू में पाता हूं॥

मैं शायर हूं मुझे फ़ितरत[15] के नज़्ज़ारों से उल्फ़त है,
मेरा दिल दुश्मने-नग़मा-सराई[16] हो नहीं सकता।
मुझे इन्सानियत का दर्द भी बख़्शा है क़ुदरत ने,
मेरा मक़सद फ़क़त शोला-नवाई[17] हो नहीं सकता।

---

१. विद्रोहपूर्ण २. युद्ध और संघर्ष ३. आनंद ४. स्वभाव ५. खून बहाना ६. रुचि ७. मूल्य ८. नृत्य और संगीत की ९. प्रिय संगीत १०. जलन, दर्द से भरी ११. कल्पना में १२. भोलेपन से भरी हुई घटनाएँ १३. तीव्रता १४. सोई हुई १५. प्रकृति १६. गीत गाने का विरोधी १७. आग बरसाना

जवां हूं मैं जवानी लग़ज़िशों का[1] एक तूफ़ां है,
मेरी बातों में रंगे-पारसाई[2] हो नहीं सकता।

मेरे सरकश तरानों की हक़ीक़त[3] है तो इतनी है,
कि जब मैं देखता हूं भूक के मारे किसानों को,
ग़रीबों, मुफ़लिसों को, बेकसों को, बेसहारों को,
सिसकती नाज़नीनों को, तड़पते नौजवानों को,
हुकूमत के तशद्दुद[4] को, अमारत[5] के तकब्बुर[6] को,
किसी के चीथड़ों को और शहनशाही ख़ज़ानों को,

तो दिल ताबे-निशाते-बज़्मे-इशरत ला नहीं सकता[7]।
मैं चाहूं भी तो ख़्वाब-आवर[8] तराने गा नहीं सकता॥

१. भूलों, गिरावटों, कमज़ोरियों का २. पवित्रता का रंग ३. वास्तविकता ४. अत्याचार ५. धन-दौलत ६. घमंड ७. वैभव-पूर्ण समाज के ऐश्वर्य को सहन नहीं कर सकता ८. सुलाने वाले

आज

साथियो ! मैंने बरसों तुम्हारे लिए
चांद, तारों, बहारों के सपने बुने
हुस्न और इश्क़ के गीत गाता रहा
आरज़ुओं[1] के ईवां सजाता रहा
मैं तुम्हारा मुग़न्नी[2], तुम्हारे लिए
जब भी आया नए गीत लाता रहा
आज लेकिन मेरे दामने-चाक में[3]
गर्दे-राहे-सफ़र के सिवा कुछ नहीं ।

मेरे बरबत के सीने में नग़मों का दम घुट गया है
तानें चीख़ों के अंबार में दब गई हैं
और गीतों के सुर हिचकियां बन गए हैं
मैं तुम्हारा मुग़न्नी हूं, नग़मा नहीं हूँ
और नग़मे की तख़लीक़[4] का साज़ो-सामान
साथियो ! आज तुमने भस्म कर दिया है
और मैं—अपना टूटा हुआ साज़ थामे
सर्द लाशों के अंबार को तक रहा हूँ
मेरे चारों तरफ़ मौत की वहशतें[5] नाचती है
और इन्सान की हैवानियत जाग उठी है

---

१. मनोकामनाओं २. संगीतकार ३. फटे हुए दामन में ४. रचना ५. वीभत्सता

बर्बरियत[१] के ख़ूख़्वार अफ़रीत[२]
अपने नापाक जबड़ों को खोले
ख़ून पी-पी के ग़ुर्रा रहे हैं
बच्चे मांओं की गोदों में सहमे हुए हैं
अस्मतें[३] सर-बरहना[४] परेशान हैं
हर तरफ़ शोरे-आहो-बुका[५] है
और मैं इस तबाही के तूफ़ान में
आग और ख़ून के हेजान[६] में
सरनगूं[७] और शिकस्ता[८] मकानों के मलबे से पुर रास्तों पर
अपने नग़मों की झोली पसारे
दर-ब-दर फिर रहा हूँ—
मुझको अमन और तहज़ीब की भीख दो
मेरे गीतों की लय, मेरे सुर, मेरी नै
मेरे मजरूह[९] होंटों को फिर सौंप दो
साथियो ! मैंने बरसों तुम्हारे लिए
इन्क़िलाब और बग़ावत के नग़मे अलापे
अजनबी[१०] राज के ज़ुल्म की छांव में
सरफ़रोशी[११] के ख़्वाबीदा[१२] जज़्बे[१३] उभारे
इस सुबह की राह देखी
जिसमें इस मुल्क की रूह आज़ाद हो

---

१. बर्बरता २. राक्षस ३. स्त्रियों की पवित्रता ४. नंगे सिर ५. आहों और विलाप का शोर ६. उथल-पुथल ७. जिनका सिर नंगा है (छतें टूटी हुई हैं) ८. टूटे-फूटे ९. घायल १०. विदेशी ११. बलिदान १२. सोये हुए १३. भावनाएँ

आज ज़ंजीरे-महकूमियत[1] कट चुकी है
और इस मुल्क के बहरो-बर[2] , बामो-दर[3]
अजनबी क़ौम के ज़ुल्मत-अफ़शां[4] फरेरे[5] की मनहूस
छांव से आज़ाद हैं

खेत सोना उगलने को बेचैन हैं
वादियां लहलहाने को बेताब हैं
कोहसारों[6] के सीने में हेजान है
संग और खिश्त[7] बेख़्वाब व बेदार[8] हैं
इनकी आंखों में तामीर[9] के ख़्वाब हैं
इनके ख्वाबों को तकमील[10] का रूप दो
मुल्क की वादियां, घाटियां, खेतियां औरतें, बच्चियां—
हाथ फैलाए ख़ैरात की मुन्तज़िर[11] हैं
इनको अमन और तहज़ीब की भीक दो
माँओं को उनके होंटों की शादाबियां[12]
नन्हे बच्चों कों उनकी खुशी बख़्श दो
मुझको मेरा हुनर, मेरी लय बख़्श दो
मेरे सुर बख़्श दो, मेरी नै बख़्श दो
आज सारी फ़िज़ा[13] भिखारी है

---

१. दासता की बेड़ी २. समुद्र और धरती ३. छत और द्वार ४. अन्धकार फैलाने वाले ५. झंडे ६. पहाड़ों ७. पत्थर और ईंट ८. जागरूक ९. निर्माण १०. पूर्णता ११ प्रतीक्षा में १२. खुशियां १३. वातावरण

और मैं इस भिखारी फ़िज़ा में
अपने नग़मों की झोली पसारे
दर-ब-दर फिर रहा हूँ
मुझको फिर मेरा खोया हुआ साज़ दो
मैं तुम्हारा मुग़न्नी—तुम्हारे लिए
जब भी आया, नये गीत लाता रहूंगा ।

तुलूअ-ए-इश्तराकियत

जश्न बपा है[२] कुटियाओं में, ऊंचे ईवां[३] कांप रहे हैं,
मज़दूरों के बिगड़ते तेवर देखके सुल्तां कांप रहे हैं।
जागे हैं अफ़लास[४] के मारे, उट्ठे हैं बेबस दुखियारे,
सीनों में तूफ़ां का तलातम[५], आंखों में बिजली के शरारे।
चौक-चौक पर, गली-गली में, सुर्ख़ फरेरे लहराते हैं,
मज़लूमों के बाग़ी लश्कर सैल-सिफ़त[६] उमड़े आते हैं।
शाही दरबारों के दर से फ़ौजी पहरे ख़त्म हुए हैं,
ज़ाती[७] जागीरों के हक़ और मोहमिल[८] दावे ख़त्म हुए हैं।
शोर मचा है बाज़ारों में, टूट गए दर ज़िन्दानों के[९],
वापस मांग रही है दुनियां ग़सब-शुदा हक़[१०] इन्सानों के।
रुसवा बाज़ारी ख़ातूनें[११] हक़े-निसाई[१२] मांग रही हैं,
सदियों की ख़ामोश ज़बानें सहर-नवाई[१३] मांग रही हैं।
रौंदी कुचली आवाज़ों के शोर से धरती गूंज उठी है,
दुनिया के अन्याय-नगर में हक़ की पहली गूंज उठी है।
जमअ हुए हैं चौराहों पर आकर भूखे और गदागर,
एक लपकती आंधी बनकर, एक भभकता शोला होकर।

---

१. समाजवाद का उदय २. उत्सव हो रहा है ३. महल ४. निर्धनता ५. ज़ोर ६. तूफ़ान का रूप धारण किये हुए ७. निजी ८. अर्थहीन, आधार-रहित ९. कारागृहों के द्वार १०. हड़पे हुए अधिकार ११. अपमानित बाज़ारी औरतें १२. स्त्रीत्व का अधिकार १३. प्रभावशाली आवाज़

कांधों पर संगीन कुदालें, होंटों पर बेबाक[1] तराने,
दहक़ानों के दल निकले हैं अपनी बिगड़ी आप बनाने।
आज पुरानी तदबीरों से[2] आग के शोले थम न सकेंगे,
उभरे जज़्बे दब न सकेंगे उखड़े परचम[3] जम न सकेंगे।
राजमहल के दरबानों से ये सरकश तूफां न रुकेगा,
चन्द किराए के तिनकों से सैले-बेपायां[4] न रुकेगा।
कांप रहे हैं ज़ालिम सुल्तां, टूट गए दिल जब्बारों के[5],
भाग रहे हैं ज़िल्ले-इलाही[6], मुंह उतरे हैं ग़द्दारों के।
एक नया सूरज चमका है, एक अनोखी जू-बारी[7] है,
ख़त्म हुई अफ़राद की शाही[8], अब जम्हूर[9] की सालारी[10] है॥

---

१. निडर २. उपायों से ३. झंडे ४. असीम तूफ़ान ५. अत्याचारियों के ६. 'परमात्मा की छाया' (बादशाह, राजा) ७. प्रकाश की वर्षा ८. एक व्यक्ति की सत्ता ९. जनतंत्रवाद १०. सेनापतित्व

आवाज़े आदम[1]

दबेगी कब तलक आवाज़े-आदम, हम भी देखेंगे।
रुकेंगे कब तलक जज़बाते-बरहम[2] हम भी देखेंगे।
चलो यूं ही सही ये जौरे-पैहम[3] हम भी देखेंगे॥
दरे-ज़िन्दां[4] से देखें या उरूजे-दार[5] से देखें।
तुम्हें रुसवा[6] सरे-बाज़ारे-आलम[7] हम भी देखेंगे।
ज़रा दम लो माआले-शौकते-जम हम भी देखेंगे॥
ब-ज़ोमे-कुव्वते-फ़ौलादो-आहन[8] देख लो तुम भी।
ब-फ़ैज़े-जज़बा-ए-ईमान-ए-मोहकम[9] हम भी देखेंगे।
जबीने-कज-कुलाही[10] ख़ाक पर ख़म[11] हम भी देखेंगे॥
मकाफ़ाते-अमल[12] तारीख़े-इन्सां[13] की रवायत[14] है
करोगे कब तलक नावक[15] फ़राहम[16] हम भी देखेंगे।
कहां तक है तुम्हारे जुल्म में दम हम भी देखेंगे॥
ये हंगामे-विदअ़-ए-शब[17] है ऐ जुल्मत के फ़रज़न्दो[18]।
सहर के दोश पर[19] गुलनार परचम[20] हम भी देखेंगे।
तुम्हें भी देखना होगा ये आ़लम[21] हम भी देखेंगे॥

१. मानव की आवाज़ २. व्याकुल भावनाएँ ३. लगातार अत्याचार ४. कारागार का द्वार ५. सूली के ऊपर से ६. अपमानित ७. संसार रूपी बाजार में ८. लोहे और फ़ौलाद (हथियारों) की शक्ति के बल पर ९. दृढ़ विश्वास की भावना की कृपा से १०. बादशाहों का माथा ११. झुका हुआ १२. कार्य में कठिनाइयाँ १३. मानव जाति का इतिहास १४. परिपाटी १५. तीर १६. एकत्रित १७. रात्रि की विदा का समय १८. अन्धकार के बेटो १९. सुबह के कंधे पर २०. सुर्ख रंग का झंडा २१. परिस्थिति

कुछ ग़ज़लें

जब कभी उन की तवज्जह में कमी पाई गई।
अज़-सरे-नौ दास्ताने शौक़[1] दुहराई गई॥

बिक गये जब तेरे लब, फिर तुझको क्या शिकवा अगर।
ज़िन्दगानी बादा-ओ-साग़र से बहलाई गई॥

ऐ ग़मे-दुनियाँ तुझे क्या इल्म तेरे वास्ते।
किन बहानों से तबीयत राह पर लाई गई॥

हम करें तर्के-वफ़ा,[2] अच्छा चलो यूंही सही।
और अगर तर्के-वफ़ा से भी न रुसवाई गई?

कैसे-कैसे चश्मो-आरिज़[3] गर्दे-ग़म से[4] बुझ गये।
कैसे-कैसे पैकरों की[5] शाने-ज़ेबाई[6] गई॥

दिल की धड़कन में तवाज़न[7] आ चला है, ख़ैर हो।
मेरी नज़रें बुझ गईं या तेरी रअ्नाई[8] गई॥

उनका ग़म, उनका तसव्वुर[9] उनके शिकवे अब कहाँ।
अब तो ये बातें भी ऐ दिल! हो गईं आई-गई॥

◇ ◇ ◇

१. प्रेम-कथा २. प्रेम करना छोड़ दें ३. आंखें और कपोल ४. ग़म की धूल से ५. शरीरों की ६. सज्जा ७. संतुलन ८. लावण्यता ९. कल्पना

देखा तो था यूं ही किसी ग़फ़लत-शआर[1] ने।
दीवाना कर दिया दिले-बेइख़्तियार ने॥

ऐ आरज़ू के धुंदले ख्वाबो! जवाब दो।
फिर किस की याद आई थी मुझको पुकारने?

तुझको ख़बर नहीं मगर इक सादालोह[2] को।
बर्बाद कर दिया तेरे दो दिन के प्यार ने॥

मैं और तुम से तर्के-मुहब्बत की[3] आरज़ू।
दीवाना कर दिया है ग़मे-रोज़गार[4] ने॥

अब ऐ दिले-तबाह! तेरा क्या ख़याल है?
हम तो चले थे काकुले-गेती[5] संवारने॥

◇ ◇ ◇

मुहब्बत तर्क की मैंने, गरेबां सी लिया मैंने।
ज़माने अब तो खुश हो, ज़हर ये भी पी लिया मैंने॥

अभी ज़िन्दा हूँ लेकिन सोचता रहता हूँ ख़लवत[6] में।
कि अब तक किस तमन्ना के सहारे जी लिया मैंने॥

उन्हें अपना नहीं सकता मगर इतना भी क्या कम है।
कि कुछ मुद्दत हसीं ख्वाबों में खोकर जी लिया मैंने॥

बस अब तो दामने-दिल छोड़ दो बेकार उम्मीदो।
बहुत दुख सह लिये मैंने, बहुत दिन जी लिया मैंने॥

◇ ◇ ◇

---

१. लापरवाही जिसका स्वभाव हो २. सरल स्वभाव ३. प्रेम से हाथ खैंचने की ४. सांसारिक दुखों ने ५. संसार के केश ६. एकांत

अक़ायद[1] वहम हैं, मज़हब ख़याले-ख़ाम है साक़ी।
अज़ल से[2] ज़हने-इन्सां[3] बस्तए-औहाम[4] है साक़ी॥

हक़ीक़त-आशनाई,[5] अस्ल में गुमकर्दह-राही[6] है।
उरूसे-आगही[7] परवर्दहे-अबहाम[8] है साक़ी॥

मुबारिक हो ज़ईफ़ी[9] को ख़िरद[10] की फल्सफ़ादानी।
जवानी बेनियाज़े-इब्रते-अंजाम[11] है साक़ी॥

अभी तक रास्ते के पेचो-ख़म से दिल धड़कता है।
मेरा ज़ौक़े-तलब[12] शायद अभी तक ख़ाम[13] है साक़ी॥

वहाँ भेजा गया हूँ चाक करने पर्दा-ए-शब को[14]।
जहाँ हर सुबह के दामन पे अक्से-शाम[15] है साक़ी॥

◇ ◇ ◇

तंग आ चुके हैं कशमकशे-ज़िंदगी से हम।
ठुकरा न दें जहां को कहीं बेदिली से हम॥

मायूसी - ए - माआले - मुहब्बत[16] न पूछिये।
अपनों से पेश आये हैं बेगानगी से हम॥

लो आज हमने तोड़ दिया रिश्ता-ए-उमीद[17]।
लो अब कभी गिला न करेंगे किसी से हम॥

---

१. मान्यताएँ २. अनादि काल से ३. मनुष्य का मस्तिष्क ४. भ्रम-ग्रस्त ५. ज्ञानोदय ६. पथ विभ्रमता ७. ज्ञानरूपी दुल्हन ८. संदिग्धता की पली हुई है ९. बुढ़ापे १०. बुद्धि ११. परिणाम के भय से उदासीन १२. पाने की अभिरुचि १३. अपक्व १४. रात के पर्दे को १५. शाम की प्रतिछाया १६. प्रेम के परिणाम की निराशा १७. आशा का सम्बन्ध

उभरेंगे एक बार अभी दिल के वलवले।
गो दब गये हैं बारे-ग़मे-ज़िन्दगी से[1] हम॥

गर ज़िन्दगी में मिल गये फिर इत्तफ़ाक़ से।
पूछेंगे अपना हाल तेरी बेबसी से हम॥

अल्लाह रे फ़रेबे-मशीयत कि आज तक।
दुनिया के जुल्म सहते रहे ख़ामशी से हम॥

◇ ◇ ◇

ख़ुद्दारियों के ख़ून को अर्ज़ां[3] न कर सके।
हम अपने जौहरों को नुमायां न कर सके॥

होकर ख़राबे-मै[4] तेरे ग़म तो भुला दिये।
लेकिन ग़मे-हयात का[5] दरमाँ[6] न कर सके॥

टूटा तलिस्मे-अहदे-मुहब्बत[7] कुछ इस तरह।
फिर आरज़ू की शमअ फ़रोज़ां[8] न कर सके॥

हर शै क़रीब आके कशिश अपनी खो गई।
वो भी इलाजे-शौक़े-गुरेज़ां[9] न कर सके॥

किस दर्जा दिलशिकन[10] थे मुहब्बत के हादसे।
हम ज़िन्दगी में फिर कोई अरमां न कर सके॥

मायूसियों ने छीन लिये दिल के वलवले।
वो नशाते-रूह का[11] सामां न कर सके॥

१. जीवन की चिंताओं के बोझ से २. दैवेच्छा की प्रवंचना ३. सस्ता ४. शराब के हाथों ख़राब होकर ५. जीवन की चिन्ता ६. इलाज ७. प्रेम-काल का जादू ८. जला न सके ९. विमुख प्रेम का इलाज १०. हृदय-भंजक ११. आत्मा की तृप्ति, हर्ष

हवस-नसीब[1] नज़र को कहीं क़रार[2] नहीं,
मैं मुन्तज़िर हूं, मगर तेरा इन्तज़ार नहीं।

हमीं से रंगे-गुलिस्तां हमीं से रंगे-बहार,
हमीं को नज़्मे-गुलिस्तां[3] पे अख़्तियार नहीं।

अभी न छेड़ मुहब्बत के गीत ऐ मुतरिब[4],
अभी हयात[5] का माहौल[6] ख़ुशगवार नहीं।

तुम्हारे अ़हदे-वफ़ा[7] को मैं अ़हद क्या समझूं,
मुझे ख़ुद अपनी मुहब्बत का ऐतबार नहीं।

न जाने कितने गिले इसमें मुज़तरिब[8] हैं नदीम[9],
वो एक दिल जो किसी का गिला-गुज़ार नहीं।

गुरेज़ का नहीं क़ायल हयात[11] से, लेकिन,
जो सच कहूं तो मुझे मौत नागवार[12] नहीं।

ये किस मुक़ाम पे पहुंचा दिया ज़माने ने,
कि अब हयात[13] पे तेरा भी अख़्तियार नहीं।

---

१. लोलुपता-प्रिय २. चैन ३. उद्यान की व्यवस्था ४. संगीतकार ५. जीवन ६. वातावरण ७. वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा ८. शिकायतें, उपालम्भ ९. आकुल १०. साथी ११. जीवन से भागने के पक्ष में नहीं हूं १२. अप्रिय १३. जीवन

कुछ शेर

अभी न छेड़ मुहब्बत के गीत ऐ मुतरिब[1] ।
अभी हयात का माहौल खुशगवार नहीं ।।

◇ ◇ ◇

जिन्दगी को बेनियाज़े-आरजू[2] करना पड़ा ।
आह किन आंखों से अंजामे-तमन्ना देखते ।।

◇ ◇ ◇

फिर न कीजे मेरी गुस्ताख़ निगाहों का गिला ।
देखिये आपने फिर प्यार से देखा मुझको ।।

◇ ◇ ◇

मुझे मालूम है अंजाम रूदादे-मुहब्बत[3] का ।
मगर कुछ और थोड़ी देर सअ़इ-ए-रायगां[4] कर लूं ।।

◇ ◇ ◇

मौत आगई न हो मेरे ज़ौक़े-उमीद को[5] ।
महरूमियों में कैफ़-सा[6] पाने लगा हूं मैं ।।

◇ ◇ ◇

अपनी तबाहियों का मुझे कोई ग़म नहीं ।
तुमने किसी के साथ मुहब्बत निभा तो दी ।।

◇ ◇ ◇

---

१. गायक २. आकांक्षा-रहित ३. प्रेम-कथा का परिणाम
४. व्यर्थ प्रयत्न ५. आशावाद ६. आनन्द-सा